ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 14 जून 2026 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 14 जून 2026 से 20 जून 2026

ज्येष्ठ कृ. 14 ● वि० सं०-2082 ● वर्ष 67, अंक 24, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 202 ● सृष्टि-संवत् 1,96,08,53,126 ● पृ.सं. 1-12 ● मूल्य - 5/- रू. ● वार्षिक शु. 300/- रू.

डी.ए.वी. पटियाला में डी.ए.वी. स्थापना दिवस पर 100 यूनिट रक्तदान

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भूपिन्द्रा रोड, पटियाला की आर्य युवा समाज द्वारा डी.ए.वी. स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में एक रक्तदान शिविर लगाया गया जिसमें विद्यार्थियों के अभिभावकों व शिक्षकवृन्द ने उत्साह दिखाते हुए 100 यूनिट रक्तदान किया।

शिविर के प्रारंभ में विश्व कल्याण की कामना करते हुए वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हवन किया गया। भक्ति भाव पूर्ण भजन ***'सुख से ओ३म् शुभ नाम लो'*** की प्रस्तुति से सारा परिसर ओममय बन गया।

यह शिविर स्थानीय राजिन्द्रा अस्पताल के ब्लड बैंक में डॉक्टरों की

सहयोगी टीम, रोटरी क्लव, सोशल वेलफेयर सोसायटी, प्रोफेशनल विमेन कॉलेज, पटियाला तथा एक्सिस बैंक, पटियाला के सहयोग से सम्पन्न किया गया।

प्रधानाचार्य श्री विवेक तिवारी ने कहा 'रक्तदान–महादान है। किसी ज़रूरतमंद को समय पर रक्त उपलब्ध करवाकर हम उसे जीवन प्रदान कर सकते हैं। आधुनिक तकनीकी प्रगति के बावजूद मानव रक्त का कोई विकल्प उपलब्ध नही है तथा रक्त की एक यूनिट तीन लोगों का जीवन बचा सकती है।'

कार्यक्रम में विद्यालय के पूर्व छात्र एवं गांव लचकानी के सरपंच सरदार प्रीतपाल सिंह खरोड ने मुख्य अतिथि एवम् श्रीमती अनु तिवारी ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। प्रधानाचार्य ने मुख्य अतिथि को सम्मानित किया।

डी.ए.वी. पक्खोवाल रोड, लुधियाना ने मनाया डी.ए.वी. स्थापना दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पक्खोवाल रोड, लुधियाना की आर्य युवा समाज इकाई द्वारा डी.ए.वी. स्थापना दिवस अत्यंत श्रद्धा के साथ मनाया गया।

महर्षि दयानंद सरस्वती एवं महात्मा हंसराज को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

विद्यालय के कार्यालय स्टाफ, खेल अध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा संयुक्त रूप से हवन–यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें मानव उत्थान तथा समाज में सुख, शांति और समृद्धि की कामना की गई।

विद्यालय के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने ग्रीष्मावकाश के दौरान अपने–अपने घरों पर वृक्षारोपण अभियान चलाया।

विद्यालय के स्टाफ सदस्यों द्वारा छबील का आयोजन किया गया। इस दौरान राहगीरों एवं स्थानीय नागरिकों को शीतल मीठा जल वितरित किया गया।

विद्यालय परिवार ने इस अवसर पर आर्यरत्न, डॉ. पूनम सूरी, माननीय अध्यक्ष, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

आर्य युवा समाज इकाई, अध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने शिक्षा, चरित्र निर्माण, पर्यावरण संरक्षण तथा मानव सेवा के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देने का संकल्प लिया।

डी.ए.वी. हलद्वानी में नए सत्र पर यज्ञ

डी.ए.वी. सेंटेनरी पब्लिक स्कूल हल्द्वानी में नवीन शैक्षिक सत्र 2026–27 का शुभारंभ विद्यालय प्रांगण में विधिवत् हवन एवं वैदिक मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विद्यालय परिवार ने सामूहिक रूप से ईश्वर से

प्रार्थना की कि यह सत्र विद्यार्थियों के लिए ज्ञान, संस्कार और सफलता का मार्ग प्रशस्त करे।

विशेष रूप से नर्सरी कक्षा में प्रवेश लेने वाले नवप्रवेशित विद्यार्थियों का विद्यारंभ संस्कार एवं प्रवेश समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ हवन एवं वैदिक मंत्रोच्चार से हुआ, जिससे वातावरण पवित्र और प्रेरणादायी बन गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने नन्हें विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों का स्वागत करते हुए शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला तथा शिक्षकों ने उन्हें विद्यालय की परंपराओं, अनुशासन और शैक्षिक वातावरण से परिचित कराया।

नवप्रविष्ट बच्चों को पुष्प एवं तिलक अर्पित किए गए और उन्हें विद्यालय परिवार का हिस्सा बनने की शुभकामनाएँ दी गईं। अभिभावकों ने विद्यालय की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की सराहना की और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

कार्यक्रम का समापन शांति पाठ एवं सामूहिक प्रार्थना के साथ हुआ, जिसमें विद्यालय परिवार ने संकल्प लिया कि सत्र 2026–27 को शिक्षा, अनुशासन और संस्कार की त्रिवेणी से समृद्ध बनाया जाएगा।

जो सब जगत् के पदार्थों को संयुक्त करता और सब विद्वानों का पूज्य है और ब्रह्मा से लेके सब ऋषि मुनियों का पूज्य था, है और होगा, इससे उस परमात्मा का नाम **'यज्ञ'** है। क्योंकि वह सर्वत्र व्यापक है। स. प्र. समु. १

{संपादक – पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 14 जून 2026 से 20 जून 2026

ब्रह्म-कवच से रक्षित

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

परीवृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं, कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च।
मा मा प्रापन्निषवो दैव्या याः, मा मानुषीरवसृष्टा वधाय।।
अथर्व17.1.28

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **आदित्यः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**अहं**) मैं (**ब्रह्मणा**) ब्रह्म–रूप (**वर्मणा**) कवच से [तथा] (**कश्यपस्य**) द्रष्टा आत्मा की (**ज्योतिषा**) ज्योति से (**वर्चसा च**) और वर्चस्विता से (**परीवृतः**) आच्छादित [होऊँ]। (**याः**) जो (**दैव्याः**) दैवी (**इषवः**) बाण हैं, वे (**मा**) मुझे (**मा**) मत (**प्रापन्**) प्राप्त हों, (**मा**) न ही (**बधाय**) वध के लिए (**अवसृष्टाः**) छोड़े हुए (**मानुषी**) [इषवः] मानुषी बाण [प्राप्त हों]।

●संसार में रहते हुए मुझे अनेक दैवी और मानुषी विपत्तियों से संघर्ष करना है। देखो, कैसे–कैसे दैवी बाणों का मुझपर प्रहार हो रहा है। कभी भूकम्प आ रहे हैं, कभी सर्वनाशिनी आँधियाँ चल रही हैं, कभी असमय ओले वरस रहे हैं, कभी ज्वालामुखी फूट रहे हैं, कभी अतिवृष्टियाँ और अनावृष्टियाँ हो रही हैं, कभी दुर्भिक्ष पड़ रहे हैं, कभी नदियों में विनाशलीला मचा देनेवाली बाढ़े आ रही हैं, कभी उल्कापातों की झड़ी लग रही है कभी भूमि फट रही है, कभी ऋतुओं में अव्यवस्था हो रही है, कभी महामारियाँ फैल रही हैं। इन सब दैवी बाणों के प्रहार मुझ मानव को क्षणभर में नष्ट–भ्रष्ट कर सकते हैं। दूसरी और मानुषी बाणों पर,मनुष्य द्वारा उत्पन्न की गई विपत्तियों पर भी दृष्टिपात करो। तलवारें खनखना रही हैं, तोपें गोले बरसा रही हैं, बन्दूको की गोलियाँ सिर पर से निकट रही है, संधातक विस्फोट किये जा रहे हैं। ऐटम–बम छोड़े जा रहे हैं, विषैली गैसें फैलाई जा रही हैं, नये–से–नये संहारक आविष्कार किये जा रहे हैं। इन सब मानुषी बाणों से भी मैं विपद्ग्रस्त तथा जर्जर हो गया हूँ, और मानव–जाति संहार के कगार पर खड़ी प्रतीत हो रही है।

इस प्रकार के दैवी और मानवी बाणों के प्रहार से बचने का एक उपाय यह है कि मैं ब्रह्म का कवच धारण कर लूँ। ब्रह्म का कवच पहनते ही हृदय में धैर्य , आश्वासन और बड़े का सहारा प्राप्त कर लेने का सन्तोष जागृत होगा और जैसे सेनापति के साथ होने पर सैनिकों में उत्साह की लहरें हिलोरें मारती रहती हैं वैसे ही मेरे अन्दर संकटो से जूझने का उत्साह बना रहेगा। इन बाणों से आत्मा–रक्षा का दूसरा उपाय यह है कि मैं द्रष्टा आत्मा (कश्यप) की ज्योति और वर्चस्विता से अनुप्राणित हो जाऊँ। मेरे आत्मा में जो शक्ति निहित है, उसे पहचानूँ। आत्मा में जो अमरता की ज्योति जग रही है उसके दर्शन करुँ तथा इस भावना को अपने अन्दर जगाऊँ कि आत्मा अमर है, अतः संघर्षों से घबराना क्या! इस प्रकार ब्रह्म–कवच और कश्यप आत्मा की ज्योति से आच्छादित होकर मैं समस्त दैवी और मानुषी वाणों से आत्म–रक्षा में समर्थ हो सकता हूँ। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रभु–भक्ति

● महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

'प्रभु–भक्ति' पुस्तक में स्वामी जी मानव जीवन के परम लक्ष्य 'मोक्ष–प्राप्ति' के साधनो का निर्देश कर रहे हैं। वास्तव में ऋषियों का जीवन परोपकार के लिए ही होता है।

परमात्मा प्राप्ति का मार्ग शरीर व आत्मा के शुद्धिकरण पर निर्भर करता है, इसमें स्वामी जी शरीर व आत्मा की शुद्धि के लिए उपयोगी बातें बता रहे है।

प्रातः 3 या 4 बजे उठना, रात को शयन मन्त्रों व प्रातः जागरण मन्त्रों का श्रद्धापूर्वक पाठ करना, संतुलित भोजन करना, व्यायाम करना, ध्यान–भजन करना, मृत्यु को सदैव ध्यान में रखना, मन–बुद्धि व अन्य इन्द्रियों को वश में रखना, सत्य, अहिंसा, ब्रहमचर्य, त्याग, तपस्या आदि सद्गुणों को धारण करना, सबका सम्मान करना, निन्दा कभी न करना, भद्र बोलना, भद्र सुनना, तदनुकूल आचरण करना, किसी को किसी भी प्रकार का कष्ट न देना, विनम्र रहना, **"सादा जीवन उच्च विचार"** के सिद्धान्त पर चलना, चिन्ता कदापि न करना, विषय वासनाओं के जाल में न फँसना, मन वाणी और कर्म से विश्व का कल्याण करना, काम, क्रोध, मोह, ईर्ष्या, असूया आदि अवगुणों का सर्वथा त्याग कर देना आदि गुणों पर चलकर ही हम सुखी रह सकते हैं और अपना जीवन सफल कर सकते हैं..... । **.... अब आगे**

भक्तों के लिए उपयोगी बातें

51. धीरे–धीरे बहिर्मुखता का त्याग करके अन्तर्मुखता का सम्पादन करना ही साधना तथा भक्ति का सच्चा स्वरूप है।
52. मन के चार प्रकार हैं–(1) धर्म के विमुख जीव का मन मुर्दा है। (2) पापी का मन रोगी है। (3) लोभी तथा स्वार्थी का मन आलसी है। (4) भजन–साधन में तत्पर भक्त का मन स्वस्थ है।
53. पहले तो मनुष्य जन्म पाना ही दुर्लभ है; वह मिल गया तो मानो संसार–सागर से पार होने के लिए नौका मिल गई; परन्तु इस नौका को खेनेवाला कोई गुरु मिले और भक्ति की अनुकूल वायु मिले, तभी वह पार जा सकेगी। इसलिए वीतराग अनुभवी गुरु और भक्ति की शरण लो। कहीं ऐसा न हो कि नौका पड़ी–पड़ी बेकार हो जाए।
54. कोई भी काम करने लगो तो याद रक्खो कि ईश्वर तुम्हें देख रहा है। यदि ऐसा ध्यान रक्खोगे तो कोई भी खोटा कर्म तुम नहीं कर पाओगे।
55. सत्य और धर्म की रक्षा दृढ़ता से होती है। जिसे प्राणों का मोह है, वह कर्म–धर्म का पालन कर ही नहीं सकता।
56. इसे मत भूलो कि किसी विषय में घुसना बहुत सहज है किन्तु फिर उससे छुटकारा पाना अत्यन्त कठिन है। सँभल जाओ! भूलकर भी, क्षण मात्र के लिए भी विषयों में मत फँसो।
57. जिस प्रकार वायु की सहायता पाकर आग शुष्क तृण–समूह को जला देती है, इसी प्रकार चित्त में वासनाओं, पाप–वृत्तियों को जलाने के लिए भगवान् की भक्ति समर्थ होती है।
58. जिह्वा का स्वाद जब भक्त को घेर लेता है और वह अधिक खाने लगता है तो भक्ति रोने लगती है; भक्त भक्ति से दूर हो जाता है।
59. विपत्ति, कष्ट–क्लेश और दुःख में धैर्यवान् रहनेवाला और उन्हें प्रसन्नता से सहकर फिर उभर आनेवाला मनुष्य अपने–आप को प्रभु कृपा का पात्र बना लेता है।
60. प्राणियों के देह धारण करने की सफलता इसी में है कि निर्दम्भ, निर्भय और शोकरहित भगवान् के गुणगान और भक्ति में तत्पर रहें।
61. संत–समागम निस्सन्देह दुर्लभ है। महात्मा सुन्दरदास जी ने क्या सुन्दर कहा है–

तात मिलै पुनि मात मिलै सुत भ्रात मिलै युवती सुखदाई।
राज मिलै गज–बाज मिलै सब साज मिलै मन–वांछित पाई।।
लोक मिलै सुरलोक मिलै विधिलोक मिलै वइकुण्ठहुँ जाई।

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

ईश्वर - अस्तित्व का प्रमाण - सृष्टि रचना

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

विश्ववंद्य, विश्वरत्न महर्षि दयानन्द आर्यसमाज के दूसरे नियम का समापन इस प्रकार करते हैं–**'वह सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।'** इस वाक्यांश से मेरी समझ में यही आया कि ईश्वर की अवधारणा का मापदण्ड उसका सृष्टिकर्ता होना, आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य है। सीधी–सादी बात है जो सृष्टि रचना नहीं करता, वह ईश्वर हो ही नहीं सकता।

सृष्ट, सृष्टि रचना और सृष्टि रचना का कर्ता इन बिन्दुओं को विस्तार देने पर ही, महर्षि दयानन्द के उपरोक्त समापन वाक्यांश का अर्थ समझना और आत्मसात करना कुछ आसान होगा।

सृष्ट शब्द का अर्थ है–बना हुआ, बनाया गया। संज्ञा हुई सृष्टि अर्थात् यह सृष्टि– संसार बना हुआ है, जो वस्तु बनी हुई होती है, स्वाभाविक रूप से उसका बनाने वाला भी होना चाहिए! इसीलिये विज्ञानवेत्ता, चारों वेदों का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद करने वाले विश्व विख्यात आर्य संन्यासी डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती कहते हैं–जब सृष्टि है और उसका बनाने वाला भी होना चाहिए तो उसे कोई भी नाम दें–वह सृष्टिकर्ता ही कहलावेगा। उसे ईश्वर सम्बोधित करने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। आधुनिक भौतिक विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान ने सृष्टि के भिन्न–भिन्न प्रत्येक स्वरुपों की जानकारी अत्यन्त सुलभ करा दी है। विश्व का प्रत्येक शिक्षित बालक–बालिका अच्छी तरह जानता है/जानती है कि पृथिवी गोल–अंडाकार है। अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा 365. 256 दिनों में करती है। उसकी भ्रमण गति 1,07,200 किलो मीटर प्रतिघन्टा है। पृथिवी से सम्बन्धित अन्य विवरण यथा वजन–भार आयतन, पर्तो में बनावट, तापमान आदि की जानकारी भी सहज ही उपलब्ध है। पृथिवी का गुरुत्वाकर्षण अन्तरिक्ष में अन्य पिण्डों के साथ विशेष कर सूर्य और चन्द्रमा से है। यह गुरुत्वाकर्षण पारस्परिक है। गुरुत्वाकर्षण पृथिवी को अपने अक्ष पर स्थिर रखता है और उसकी परिक्रमण गति को नियंत्रित करता है। पृथिवी और चन्द्रमा के बीच गुरुत्वाकर्षण के कारण समुद्र में ज्वार–भाटा आता है।

पाश्चात्य जगत् इन उपलब्धियों का श्रेय अपने वैज्ञानिकों, गणितज्ञों को देता है। मैकाले के षड़यन्त्र से हम भारतीयों ने यही पढ़ा, समझा। विश्व को ज्ञान–विज्ञान की देन समझा। यथार्थ कुछ और ही है। महान गणितज्ञ एवं खगोलविद ब्रहमगुप्त, समय ईस्वी सन् 598–665, ने सूर्य वर्ष की गणना 365 दिन 5 घन्टे और 19 सैकन्ड की, जो पूर्णतया सही है। सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण का समय निश्चित किया। उसने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत यह कहते हुए बताया कि पदार्थ पृथिवी पर इसलिये गिरते हैं कि पृथिवी की प्रकृति ही यही है कि वह पदार्थों को आकर्षित करे जैसे जल का बहना उसकी प्रकृति है। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त 1000 वर्ष बाद सन् 1687 में प्रस्तुत किया। इसी तरह बताया गया, अब भी पढ़ाया जाता है कि पहिली बार राइट ब्रदर्स ने 17 दिसम्बर 1903 को वायुयान उड़ान का परीक्षण किया जबकि तथ्य यह है कि राइट ब्रदर्स से आठ वर्ष पूर्व 1895 में शिवकर बापूजी तलपदे ने चौपाटी–मुम्बई में न्यायाधीश महादेव गोविन्द रानाडे, सयाजीराव गायकवाड़–बड़ौदा नरेश, लालजी नारायण आदि श्रेष्टिजन व विशाल जनसमूह की उपस्थिति में वायुयान उड़ान का सफल परीक्षण किया। तलपदे जी के स्त्रोत महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, विमान शास्त्र आदि ग्रंथ उन्होंने स्वीकार किए हैं। इसी स्थान पर इतना व्यतिक्रम आवश्यक था। अस्तु !

वेद की मान्यता है कि इस पृथिवी के अतिरिक्त अन्य ग्रह हैं, जहाँ जीवन है। *टाइम्स ऑफ इन्डिया,* ग्वालियर संस्करण दिनांक 21 जून 2017 के अनुसार अमेरिका के नासा अनुसंधान केन्द्र की कैपलर अन्तरिक्ष दूरबीन ने 219 ग्रहों की खोज की है जिनमें दस ग्रह पृथिवी के आकार के हैं और इनमें जीवन के सभी आवश्यक तत्व उपलब्ध हैं।

इसके कुछ ही दिन पूर्व एक टी. वी. शो में बताया गया था कि पृथिवी से 15 लाख प्रकाश वर्ष की दूरी पर एक सौर मण्डल पाया गया है जिसके ग्रहों में जीवन के लिये सभी आवश्यक तत्व उपलब्ध हैं। विज्ञान जीवन का प्रस्फुटन 1 अरब वर्ष मानता है जबकि वेद 1,96,08,53,118 {यह लेख अगस्त, 2017 में लिखा गया} । इन खोजों से वैदिक मान्यताओं की पुष्टि होती है।

महर्षि दयानन्द कृत **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका** में सृष्टि–रचना सम्बन्धी तीन अध्याय हैं जिनमें सृष्टि रचना सम्बन्धी पर्याप्त विवरण मिलता है।

सृष्टिकर्ता परमात्मा तो हमेशा ही रहता है क्योंकि सृष्टि की रचना तो वही करता है। प्रश्न उठता है कि सृष्टि रचना से पूर्व की स्थिति क्या रहती है ? वेदानुसार सृष्टि रचना से पूर्व, सृष्टिकर्ता और सृष्टि रचना की सामग्री रहती है। सृष्टि निर्माण की सामग्री को ही वैदिक भाषा में कारण तत्व निरूपित किया गया है। कारण तत्व को सीधी सरल भाषा में बीज रूप कहा जा सकता है और यह कारण तत्व ईश्वर के सामर्थ्य में ही रहता है।

सृष्टि का आशय केवल इस पृथिवी से ही नहीं है अपितु समस्त ज्ञात–अज्ञात नक्षत्र मंडल से है। जिन ग्रहों में जीवन है, वहाँ की समस्त वस्तुएँ–पदार्थ, जीव–जन्तु इस रचना में सम्मिलित हैं।

वर्तमान सृष्टि ही नहीं, पूर्व में जो सृष्टि हुई थी और भविष्य में जो होगी, उसका कर्ता परमेश्वर ही है। सृष्टि–रचना, संवर्धन और प्रलय अर्थात् कारण तत्व में विलीन करना एकमात्र उस परमेश्वर का ही कार्य है। सृष्टि रचना एक निरन्तर प्रवहमान ईश्वरीय कार्य है।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के सृष्टि रचना विषयक वर्णन का संक्षेप में लिखने का प्रयास करता हूँ।

परमात्मा के अत्यन्त 'सूक्ष्म' सामर्थ्य से 'अन्तरिक्ष' अर्थात् भूमि और सूर्य्यादि लोकों के बीच पोल–रिक्त स्थान है। वह भी नियत किया हुआ है। सर्वोत्तम सामर्थ्य से सूर्य्यादि प्रकाश करने वाले और प्रकाशरहित पृथिवी आदि लोक, परमाणु कारण से पृथिवी, जल के कारण से जल, श्रोतरूप सामर्थ्य से दिशाएँ उत्पन्न की हैं। इसी प्रकार सब लोकों के कारणरूप सामर्थ्य से परमेश्वर ने सब लोक और उसमें बसने वाले पदार्थों को उत्पन्न किया है। परमेश्वर ने आकाश को रचा है। जो सब तत्वों के ठहरने का स्थान है। ईश्वर ने प्रकृति से लेकर घास पर्यन्त जगत् को रचा है।

पृथिवी, सूर्य, चन्द्रमादि अपनी–अपनी परिधि में, अन्तरिक्ष के मध्य में (जहाँ वे भार विहीन हो जाते हैं) सदा घूमते रहते हैं। पृथिवी सूर्य के चारों ओर घूमती है। सूत्रात्मा वायु के आधार और आकर्षण से सब लोकों का धारण और भ्रमण होता है। परमेश्वर अपने सामर्थ्य से सब लोकों का धारण, भ्रमण और पालन कर रहा है।

चन्द्रलोक पृथिवी के चारों ओर घूमता है। कभी–कभी पृथिवी और सूर्य के बीच में आ जाता है। सूर्य के प्रकाश से चन्द्रमा प्रकाशित होता है। सूर्य की किरणें चन्द्रमा से परावर्तित होकर बलशाली व शीतल हो जाती हैं इसीलिये ईश्वर ने नक्षत्र लोकों के समीप चन्द्रमा स्थापित किया है।

लगभग दो अरब (200 करोड़) वर्ष पहिले के सृष्टि सम्बन्धी वैदिक ज्ञान की सम्पुष्टि, आधुनिक विज्ञान कर रहा है। यह विज्ञान छः हजार वर्ष से पूर्व तिरोहित हो गया था। महर्षि जैमिनी के पश्चात् महर्षि दयानन्द ने उसका पुनरुद्धार ही नहीं किया बल्कि ज्ञान–विज्ञान के उस आसन पर प्रतिष्ठित कर दिया, जहाँ से अब, उसे डिगाने का सामर्थ्य किसी भी विज्ञानवेत्ता में नहीं है।

सृष्टि रचना की इस पृष्ठभूमि से पूर्णतया आश्वस्त व सागोपांग दीक्षित हो जाने के पश्चात् इस तुला पर अन्य मतों (धर्मो) को तोलना महर्षि के लिये बहुत ही सहज कार्य था। इसलिये इन धर्मो के आचार्यों से, शास्त्रार्थ में कभी पराजित नहीं हुए। परमहंस, गुरु विरजानन्द महाराज के दिए दोनों वरदान **'कालजिव्ह'** व **'कुलक्कर'** पूर्णतया चरितार्थ कर दिए।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के तेरहवें सम्मुलास (अध्याय) में ईसाईमत की समीक्षा 133 प्रश्नोत्तर के रूप में की है। निम्नांकित प्रश्न जो तौरेत, इन्जील व बाईबिल से लिये गए हैं, सृष्टि रचना का स्वरूप निरुपित करते हैं। इन प्रश्नोत्तरों का सारांश क्रमशः दिया जाता है। प्रश्न क्रमांक सत्यार्थप्रकाश के ही हैं।

प्रश्न. 1 ईसाई इस सृष्टि को ही प्रथम व अंतिम सृष्टि मानते हैं।.. ... पृथिवी बेडौल और सूनी थी और गहराई में अंधियारा था। ईश्वर सिनाई पर्वत, चौथे आसमान आदि में विशेष रहता है।

प्रश्न–4 सृष्टि के पूर्व, ईश्वर के अतिरिक्त कोई वस्तु नहीं थी।

प्रश्न–5 आदम को भूमि की धूल से बनाया और उसके नथुनों में साँस फूँकी। नारी को धूल से नहीं बनाया, उसे आदम की पसली की एक हड्डी से बनाया।

प्रश्न–7 ईश्वर ने अदन में बाड़ी बना कर आदम और हव्वा को उसमें रखा। एक वृक्ष (ज्ञान और अमृत दाता) के फल खाने से मना

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

गीता और महर्षि दयानन्द

● अमर स्वामी

गतांक से आगे...

देवेन्द्रनाथ जी वाले जीवन चरित्र के जिस प्रमाण को गीता शत्रुओं ने वेद के प्रमाण के समान स्वतः प्रमाण माना हुआ है गीता का प्रामाण्य स्वीकार न करने की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि वहाँ बनेड़ा के राजा साहिब की ओर से गीता के जो दो श्लोक बोले बताये गये हैं वे दोनों श्लोक ईश्वर, जीव और प्रकृति– तीनों को पृथक्–पृथक् बताने वाले हैं, जो ऋषि के अपने पक्ष में पड़ते हैं, जीव ब्रह्म की एकता मानने वालों के पक्ष में नहीं। उनके मत के तो वे दोनों श्लोक सर्वथा विरुद्ध हैं। न तो राजा जी की ओर से वह बोले जा सकते थे और न ही ऋषि की ओर से उनके अस्वीकार करने की बात हो सकती थी, यहाँ गीता के अप्रामाण्य की आवश्यकता ही नहीं थी।

गीता के जिन श्लोकों में वेद विरुद्ध होने की आशंका थी उन पर ऋषि ने लोगों का समाधान करके उनको वेदानुकूल सिद्ध किया, ऐसा कई स्थानों पर आ चुका है और जो श्लोक वेदों और ऋषि दयानन्द जी के सिद्धान्तों के अनुकूल थे उन पर **'हम गीता को प्रामाण्य स्वीकार नहीं करते हैं'** यह वाक्य बनाकर ऋषि के मत्थे मढ़ा गया है। स्पष्ट ही है कि यह वाक्य गीता के विरोधी या ऋषि के किसी विरोधी का घड़ा हुआ है।

वे दोनों श्लोक ये हैं–

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि, कूटस्थोऽक्षर उच्यते।।
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः, परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य, बिभर्त्यव्यय ईश्वरः।।
–गीता 15/16–17

अर्थ–इस लोक में दो पुरुष क्षर और अक्षर हैं। भूत अर्थात् पंचतत्त्व क्षर अर्थात् परिवर्तित होने वाले हैं और जीवात्मा अक्षर अर्थात् परिवर्तन और विनाश रहित है।

उत्तम पुरुष इन दोनों से भिन्न और है, वह परमात्मा कहा गया। तीनों लोकों में प्रविष्ट हुआ हुआ वह परमेश्वर सब का भरण पोषण करता है।

इन श्लोकों में ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों को पृथक्–पृथक् बताया गया है पर देवेन्द्र जी वाले जीवन चरित्र से प्रकट है कि राजा जी का पक्ष जीव ब्रह्म की एकता का था। विचार शील सज्जन निर्णय करें कि ये दोनों श्लोक बनेड़ा के राजा जी जो जीव और ब्रह्म को एक मानकर प्रश्न कर रहे थे वे इन श्लोकों को क्यों कहते? और यदि वह राजा जी इनका ऐसा यथार्थ अर्थ न समझकर और भूल से इन श्लोकों को (जो उनके ही पक्ष के विरुद्ध थे) बोल बैठे, तो ऋषि इनको सुनते ही यह कहते कि–राजन् यह दोनों श्लोक ही आपके प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं। यहाँ ऋषि को यह कहने की क्या आवश्यकता थी? कि "हम (इनका और सारी) गीता का प्रामाण्य स्वीकार नहीं कर करते हैं।" स्पष्ट है कि– यह बेतुकी बात किसी ने वैसे ही बिना समझे बना डाली। आश्चर्य यह है कि देवेन्द्रनाथ जी इन इलोकों का अर्थ नहीं जानते हों तो श्री घासीराम जी एम0ए0 ने भी "मक्षिका स्थाने मक्षिका" रखकर इस बात को बिना सोचे विचारे लिख दिया।

यह तो बहुत ही सीधी बात है कि यदि राजा जो अद्वैतवाद के पक्ष में गीता का कोई प्रमाण देते (यद्यपि गीता में अद्वैतवाद का पोषक कोई प्रमाण है नहीं) तो ऋषि का यह कहना बनता कि–"यह वेद विरूद्ध होने से मानने योग्य नहीं है।"

पर यह दोनों ही बातें समझ में आने योग्य नहीं हैं कि जीव ब्रह्म की एकता मानकर प्रश्न करने वाले राजा जी अपने विरुद्ध स्वयं ही प्रमाण दें और दूसरी यह कि ऋषि अपने ही पक्ष में दिये प्रमाण पर उसकी प्रामाण्यता स्वीकार करने से इनकार कर दें।

गीता विरोधियों को तो सोचने समझने की आवश्यकता ही नहीं है, उनको तो गीता के विरुद्ध कोई वाक्य मिला और तत्काल उसको उन्होंने ग्रहण किया, चाहे उसकी तुक बैठती हो चाहे न बैठती हो।

(3) तीसरा उनका महाप्रमाण यह है कि

किसी व्यक्ति ने ऋषि दयानन्द जी के सम्मुख अवतारवाद पर गीता का श्लोक बोला कि–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
– गीता–4.7

इसको सुनते ही ऋषि ने कड़ककर कह दिया कि "गीता कल की राण्ड है।"

यह वाक्य ऋषि दयानन्द जी की शैली के विरुद्ध है। गीता का यह श्लोक ऋषि के सम्मुख बार–बार आया पर ऋषि इस प्रकार का कठोर वचन न बोलकर बार–बार उसका समाधान ही किया।

रामघाट में स्वामी कृष्णानन्द जी ने अवतारवाद पर यही श्लोक बोला। ऋषि ने उत्तर में कहा कि ईश्वर निराकार है वह देह धारण नहीं करता है, देह धारण करना तो जीव का धर्म है। (देखें संख्या 9)

सत्यार्थ प्रकाश में अवतारवादियों की ओर से इस श्लोक को रखकर ऋषि ने उत्तर दिया है जिसका भाव यह कि यदि इसको ईश्वर का वचन समझते हो तो यह बात वेद विरुद्ध है क्योंकि वेद में ईश्वर को अजन्मा कहा गया है और यदि इसको श्री कृष्ण जी का वचन माना जाए जो वास्तव में है ही तो इसमें कोई हानि नहीं। वह तो जीव थे सो जीव जन्म लेते ही रहते हैं। वह धर्मात्मा पुरुष थे **"परोपकाराय सतां विभूतयः"** आदि देखिये सं. 25)

ऋषि को इस श्लोक तथा अन्य श्लोकों पर भी कभी यह कहने की आवश्यकता नहीं पड़ी कि गीता कल की राण्ड है। जो राण्ड है वह राण्ड ही है, कल की क्या और बहुत वर्षों की क्या? क्या कल की राण्ड अधिक बुरी होती है और बहुत दिनों की राण्ड अच्छी होती है? ऋषि ने गीता को न राण्ड कहा न सुहागन। यह भी वैसा ही सुना सुनाया और घड़ा घड़ाया वाक्य है। यह तो किसी जीवन चरित्र में भी नहीं है।

मुझको उपदेशक बने विजयादशमी संवत् 2028 विक्रमी को 53 वर्ष व्यतीत हो गये, 54 वां वर्ष आरम्भ हो गया। मैं जब से उपदेशक बना लगभग तभी से शास्त्रार्थ भी करता हूँ। **'यदा यदाहि.'** यह श्लोक बिना शास्त्रार्थों के भी मेरे सामने सैंकड़ों बार आया है, मैं यही उत्तर देता हूँ कि यह वचन परमेश्वर का नहीं है यह श्री कृष्ण जी का है जो एक धर्मात्मा और योगी पुरुष थे। उन्होंने अपने पुनः–पुनः जन्म लेने की बात कही है सो उन्होंने असंख्य बार जन्म लिया, हमने भी असंख्य बार जन्म लिया है। सब लेते रहेंगे। भेद केवल योगी और भोगी का यह होता है कि–भोगी–प्रकृति–अपने स्वभाव आदि के वश में होकर कर्म करता और वश में होकर ही जन्म लेता है और योगी अपनी प्रकृति और अपने स्वभाव आदि को अपने वश में करके कर्म करता और वश करके ही जन्म लेता है।

मैं गीता को न वेद मानता हूँ न दर्शन आदि। पर यह समझता हूँ कि– गीता भी संस्कृत साहित्य में एक उत्तम ग्रन्थ है उससे हमको लाभ उठाना चाहिये। जो व्यक्ति उससे लाभ न उठाना चाहें न उठायें यह तो अपनी–अपनी समझ का सौदा है। कई लोग वेदों से लाभ नहीं उठाते, दर्शनों और उपनिषदों से लाभ नहीं उठाते और न ही उठा सकते, उनसे मुझको कुछ कहना नहीं है। मैं तो यह कहता हूँ कि– यह मिथ्या प्रचार किसी को नहीं करना चाहिये कि ऋषि दयानन्द जी गीता के घोर विरोधी थे। केवल इस मिथ्या प्रचार को हटाने के लिये ही मैंने यह लेख लिखा है। आशा है विचारशील सज्जन इस पर विचार करेंगे।

एक सज्जन ने यह भी कहा कि– गीता चाहे कितना ही अच्छा ग्रन्थ हो, हम तो उसके विरुद्ध इसलिये प्रचार करते हैं कि हमको भय है कि– गीता वेद का स्थान न ले लेवे।

मैंने इस पर भी विचार किया तो मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि– सनातन धर्मी कहलाने वालों में तो गीता ही क्या वेद से ऊँचा स्थान भागवत पुराण ने ले लिया है, और क्या कहें गोस्वामी तुलसीदास जी की रामायण (राम चरित मानस) ने भी वेद से ऊँचा स्थान ले लिया है, पर आर्य समाज में गीता कभी वेद का स्थान ले ले यह तीन काल में सम्भव नहीं है, गीता वेद का स्थान ले लेगी ऐसी कल्पना करना भी अपने आप को सर्वथा बुद्धिशून्य सिद्ध करना है।

क्या गीता कभी वेद का स्थान ले सकेगी?

आर्यसमाज में प्रातः **प्रातरग्नि प्रातरिन्द्र.** आदि वेद मन्त्र बोले जाते हैं, स्नान के समय कई आर्य लोग– **आपोहिष्ठा.** आदि मन्त्र बोलते हैं। सारी सन्ध्या वेद मन्त्र द्वारा की जाती है।

ईश्वर–स्तुति प्रार्थनोपासना के मन्त्र वेद के ही हैं। हवन भी वेद मन्त्रों से किया जाता है। भोजन के समय आर्य लोग **'अन्नपते.'** आदि मन्त्र वेद का बोलते हैं रात्रि को सोते समय – **यज्जाग्रतो** आदि छः मन्त्र वेद के ही बोलते हैं।

उपदेशक–भजनोपदेशक भी व्याख्यानों और भजनों का आरम्भ वेदमन्त्र बोलकर करते हैं।

गर्भाधान से अन्त्येष्टि पर्यन्त सारे संस्कार वेद मन्त्रों से होते हैं। इन सारे कार्यों में गृह्यसूत्रों के चाहे कुछ वाक्य भी हों पर गीता का इनसे कुछ सम्बन्ध नहीं। व्याख्यानों में गीता के दो चार श्लोक बोल दिये जायें या कभी कोई गीता की कथा कर देवे तो इतने से ही गीता वेद का स्थान ले लेगी? कथा तो उपनिषदों की भी होती है, सत्यार्थप्रकाश की भी कथा होती है तो क्या सत्यार्थप्रकाश वेद का स्थान ले लेगा? यदि यह भय है तब तो किसी ग्रन्थ की भी कथा कभी नहीं होनी चाहिये।

मैं तो कहता हूँ कि कथा रामायण और महाभारत की भी होनी चाहिये, इनकी कथा नहीं होगी तो लोग इतिहासों को सर्वथा भूल जायेंगे।

वेद का स्थान संसार का कोई भी ग्रन्थ आर्यसमाज में तो ले सकता नहीं, संसार के और मूर्खों को रोक कौन सकता है? मेरी "गीता और वेद" पुस्तक भी अवश्य पढ़नी चाहिये, उससे गीता और वेद के सम्बन्ध का ज्ञान होगा।

'शास्त्रार्थ–महारथी, अमर स्वामी ग्रन्थ संग्रह' में संकलित 'गीता और महर्षि दयानन्द' से साभार

श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक

● डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

जन्म–वंश और मातृ–पितृ परिचय

वेद–व्याकरण–मीमांसा के लोकविश्रुत विद्वान् पं. श्री युधिष्ठिर मीमांसक का जन्म विक्रम संवत् 1966, भाद्रपद शुक्ला अष्टमी तदनुसार 22 सितम्बर 1909 ई. को महम्मदपुर गाँव में हुआ। पिताश्री **श्री गौरीलाल, आचार्य** तत्कालीन इन्दौर राज्य के नीमाड़ जिला के महम्मदपुर नामक ग्राम में मिडिल स्कूल के हेडमास्टर थे। पिताजी मूलतः राजस्थान प्रान्त के अजमेर मण्डल के 'विरकच्यावास' (विरञ्च्यावास) ग्राम के निवासी थे। इसी गाँव के गूजर वंश में **श्री सूरजमल पटेल** थे। ये स्वकार्यवश अजमेर गये थे और वहीं उन्होंने वेदोद्धारक स्वामी दयानन्द सरस्वती के भाषण सुने। उससे उनके विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। गाँव आने पर श्री पटेल ने इनके पिताजी सहित तीन नवयुवकों को आर्यसमाज की ओर आकृष्ट किया तथा ऋषि दयानन्द के भव्य व्यक्तित्व और गुणों से उनको परिचित कराया। फलतः श्री गौरीलाल आचार्य के हृदय में श्री सूरजमल पटेल के प्रति बहुत आदरभाव था और उन्हें वे 'आदिगुरु' विशेषण से अलंकृत करते थे। सन् 1925 ई. में जब मीमांसक जी अपने गाँव गये थे तब उन्हें भी इन **आदिगुरु** के सम्पर्क में आने का अवसर प्राप्त हुआ। उनसे ज्ञात स्वामी जी के संस्मरणों की एक चर्चा मीमांसक जी नहीं भूल सके, वह यह कि **'6 फुट से अधिक लम्बे थे। शरीर अत्यन्त गठा हुआ था, आजकल के चित्रों में जो उनका पेट बढ़ा हुआ दिखाया जाता है, वैसा नहीं था। आवाज़ उनकी शेर की तरह बुलन्द थी।'** **{आत्म–परिचय,–युधिष्ठिर मीमांसक, पृष्ठ–28, प्राप्ति स्थान–रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (131021), सोनीपत (हरयाणा), सन् 1988 ई.–प्रथम संस्करण}**

मीमांसक जी का वंश **सारस्वत ब्राह्मण, भारद्वाज गोत्र, वाजसनेय चरण, माध्यन्दिनी शाखा** और **कात्यायन** सूत्र था। आपकी माता का नाम श्रीमती यमुनाबाई था। विवाह के समय यमुनाबाई पढ़ी–लिखी नहीं थीं। किन्तु ऋषि दयानन्द के अनुयायी होने से पिताजी ने माताजी को पढ़ा–लिखा कर एक कुशल जीवन–संगिनी बना लिया। युधिष्ठिर जी के दोनों पैर जन्मतः टेढ़े (विकृत) थे, इनके पिताजी के भी दोनों पाँव टेढ़े थे। दुर्भाग्य से 1918 ई0 के फरवरी मास में इनकी माताजी यमुनाबाई का लगभग 32 वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया। उस समय बालक युधिष्ठिर केवल साढ़े आठ वर्ष के थे। मृत्यु के समय माताजी ने अपने पति (श्री गौरीलाल आचार्य) से तीन वचन लिए–1. अपने छोटे चचेरे भाई से सगे भाई के समान व्यवहार करना। 2. युधिष्ठिर को गुरुकुल भेजकर विद्वान् वेदपाठी बनाना। 3. अपना पुनर्विवाह कर लेना। आदर्श पति ने प्रारम्भिक दो वचनों का निष्ठापूर्वक पूर्णतया परिपालन किया। तृतीय वचन के सम्बन्ध में पिता ने पुत्र (युधिष्ठिर) से कहा–"तीसरा वचन मेरे अपने जीवन से सम्बद्ध था। मैं तुम्हारी माताजी को भुला नहीं सकता था, अतः उसकी पवित्र स्मृति को हृदय में सँजोये रखने के लिए पुनर्विवाह नहीं किया। **{वही, पृष्ठ–55}**

बालक युधिष्ठिर को गुरुकुल कांगड़ी आदि अनेक शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश कराने का पिताजी ने भरसक प्रयास किया, किन्तु पैर के विकृत होने तथा आयु कुछ अधिक (12 वर्ष) होने के कारण कहीं प्रवेश न हो सका। अन्ततः 'विरजानन्द आश्रम' **साधु आश्रम** (काली नदी) हरदुआगंज (अलीगढ़) में नव संस्थापित आर्ष गुरुकुल में सितम्बर 1921 ई. को युधिष्ठिर का प्रवेश हो गया। यह आश्रम स्वामी सर्वदानन्द जी का था, तथा आर्ष पद्धति से पढ़ाने वाली सर्वथा नवीन इस संस्था के आचार्य श्री पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु थे। साथ में सहयोगी पण्डित के रूप में पं. शंकरदेव जी तथा धार निवासी पं. बुद्धदेव जी भी थे। विधि का विधान विचित्र है ! यदि बालक युधिष्ठिर गुरुकुल कांगड़ी आदि संस्थाओं में प्रविष्ट हो गये होते तो आगे चलकर प्रख्यात वैयाकरण और मीमांसा–भाष्यकार के रूप में उन्हें विश्वस्तरीय ख्याति नहीं मिलती। क्योंकि गुरुकुल कांगड़ी आदि संस्थाओं के पाठ्यक्रम में व्याकरण और मीमांसा के शास्त्रीय, प्रौढ़ तथा दुरूह ग्रन्थ नहीं हैं। पं. युधिष्ठिर जी के 26वें वर्ष में एक दूसरा प्रबल आघात आने वाला था। 25 दिसम्बर 1935 ई. को उनके पिताश्री का आकस्मिक निधन नन्दबाई स्थान में हो गया, जहाँ वे स्थानान्तरित होकर शिक्षण–कार्य कर रहे थे। पिताजी का निधन आकस्मिक और दुःखद इसलिए भी था कि वे सामान्य ज्वर से पीड़ित थे। मुस्लिम डॉ. गजनफर अली पर पिताजी का बहुत अधिक विश्वास था। अतः उन्होंने अजमेर में चिकित्सा न कराकर नन्दबाई में इस होशियार और मेल रखने वाले डाक्टर से चिकित्सा कराना उचित समझा। नन्दबाई के तहसीलदार ने युधिष्ठिरजी को बताया था कि "मृत्यु के दिन सबेरे डाक्टर ने एक इन्जेक्शन दिया और उसके कुछ मिनटों के अनन्तर ही उनका शरीर छूट गया। हमें मुसलमान डाक्टर पर संदेह है कि उसने जानबूझ कर कोई मारक इन्जेक्शन लगाया था। पण्डित जी की उसके (डाक्टर के) साथ प्रायः करके इस्लाम के सम्बन्ध में बातें हुआ करती थीं और अन्दर ही अन्दर वह पण्डित जी से वैर रखता था।" **{वही, पृष्ठ–92}** पं. युधिष्ठिर जी का निष्कर्ष है कि वे (पिताजी) मुसलमान डाक्टर के दिखावटी प्रेम के वशीभूत होकर उसके ही हाथ मारे गये। इसीलिए नीतिकारों ने कहा है कि–**'विश्वस्ते नाति विश्वसेत्।'** **{वही, पृष्ठ–92}** पिताजी अपनी सर्विस में जहाँ कहीं भी रहे आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में प्राणपन से जुटे रहते थे। उनकी आर्यसमाजी गतिविधियों की प्रामाणिक और व्यापक चर्चा युधिष्ठिर जी ने अपनी 'आत्मकथा' में की है। **{आत्म–परिचय, –युधिष्ठिर मीमांसक, पृष्ठ–64–82 तक (सामाजिक कार्य में प्रवृत्त होना), पृष्ठ–96–117 तक (वैदिकधर्म का प्रचार), पृष्ठ–118–122 तक (आर्य–कुटुम्ब–सहायक द्रव्यनिधि), पृष्ठ–122–132 तक (महेश्वर में आर्यसमाजभवन–निर्माण), पृष्ठ–132–133 तक (लेखन कार्य)}** मृत्यु के समय तक वे सर्विस में थे, 55 वर्ष में सेवानिवृत्ति होनी थी। पुनरपि डाक्टर ने मृत्यु के प्रमाण–पत्र में सच्चाई जानते हुए भी 60 वर्ष की उम्र लिखी और युधिष्ठिर जी से दुर्व्यवहार भी किया। मीमांसक जी का निष्कर्ष है–इस प्रकार सम्पूर्ण घटना के परिप्रेक्ष्य में यही सिद्ध होता है कि पिताजी का वैदिक धर्म के प्रचारार्थ बलिदान हुआ। **{आत्म–परिचय, – युधिष्ठिर मीमांसक, पृष्ठ–921}**

> **श्रद्धेय पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी की परम्परा के प्रातः स्मरणीय विद्वान् श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक के जीवन और कार्यों पर यह शोधपूर्ण लेख डॉ. ज्वलन्त शास्त्री जी की सशक्त और खोज़ी लेखनी का अद्यतन विद्वानों और शोध छात्रों के लिए एक उपहार है। पाठक इस किंचित लम्बे लेख से लाभान्वित हो। इस प्रयोजन से इसे धारावाहिक रूप में प्रकाशित कर रहे हैं।**
>
> **–सम्पादक**

मीमांसक जी का अध्ययन और स्वाध्याय

युधिष्ठिर जी 03 सितम्बर 1921 ई. को साधु आश्रम हरदुआगंज में प्रविष्ट हुए थे। 1921 ई. के दिसम्बर मास में ही इस आश्रम का स्थानान्तरण अमृतसर में हो गया। गुरुजी के साथ ही पं. शंकरदेव जी तथा पं. बुद्धदेव जी भी 'विरजानन्द आश्रम अमृतसर' में आ गए। विरजानन्द आश्रम अमृतसर में युधिष्ठिर जी का–पाणिनीय शिक्षा (वर्णोच्चारण शिक्षा), शब्द रूप, धातुरूपों के स्मरण के साथ धर्म शिक्षा का पाठ और अष्टाध्यायी की प्रथमावृत्ति के प्रथमाध्याय के आरम्भ के कुछ सूत्रों का पाठ ही हो पाया था, तभी गुरुजी (पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु) 1923–24 में लगभग डेढ़ वर्ष तक मलकानों की शुद्धि–कार्य के लिए ज्येष्ठ छात्रों को लेकर आगरा चले गये। आगे प्रथमाध्याय तक व्याकरण शास्त्र में परम निष्णात गुरुवर शंकरदेव के अध्यापन के कारण युधिष्ठिर जी की व्याकरण शास्त्र की पृष्ठभूमि सुदृढ़ हो गई। शुद्धि–कार्य से लौटकर अष्टाध्यायी अध्याय 2 से 5 अध्याय तक प्रथमावृत्ति पूज्य गुरुजी ने पढ़ाई। फिर यह 'विरजानन्द आश्रम' काशी में जनवरी 1926 में आ गया। गण्डासिंहवाला (अमृतसर) को छोड़कर सुदूर काशी जाने का निश्चय गुरुजी ने इसलिए किया था कि काशी विद्या का केन्द्र है, वहाँ जाने से छात्रों का अध्ययन–अध्यापन के साथ स्वयं अपने ज्ञान में वृद्धि का मार्ग भी प्रशस्त होगा। काशी में आकर गुरुजी ने पाणनीय व्याकरण के सर्वश्रेष्ठ विद्वान् पं० देवनारायण तिवारी से सम्पूर्ण महाभाष्य का अध्ययन पूरा किया। साथ ही न्यायादि दर्शनशास्त्रों के प्रख्यात विद्वान् पं. ढुण्डिराज शास्त्री तथा पं. गिरीश शर्मा से अन्य दर्शनशास्त्रों का अध्ययन किया।

इस प्रकार अनेक विघ्न–बाधाओं के कारण काशी जाने से पूर्व (1922–25) में अष्टाध्यायी के प्रथमावृत्ति के केवल पाँच अध्याय ही पूर्ण हुए थे। काशीवास के लगभग ढाई वर्षों में युधिष्ठिर जी का अष्टाध्यायी–प्रथमावृत्ति अध्याय–6–7–8, धातु प्रक्रिया, प्रतिधातु सभी प्रक्रिया सहित (वैदिक लेट्लकार भी),

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

गतांक से आगे...

भगवान् हमें सद्बुद्धि दे

● प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार

इतना होने पर भी वह प्रभु "सविता" है, अर्थात् वह सब को उत्पन्न करने वाला है। वह उत्पन्न करने वाला ही नहीं वरन् सब को प्रेरणा देने वाला भी है अर्थात् वह सब को उत्पन्न करके यों ही नहीं छोड़ देता, प्रत्युत सब को सत्पथ पर चलने की प्रेरणा भी देता रहता है। और वह सत्प्रेरणा भी इसलिए देता रहता है कि जिससे सब सुदीर्घ काल तक प्राणवान् बन के रह सकें, जी सकें, सब दुःखों से दूर हो सकें और सब सुखों को पा सकें। इसलिए ही तो दीर्घायुष्य एवं स्वास्थ्य के लिए वह वेद में एवं भीतर से प्रातः–सायं प्राणवान् वायु में भ्रमणार्थ प्रेरित करता रहता है। वह प्रभु चाहता है कि सब के दुःख दूर हों। तभी तो जहाँ वह नाना प्रकार की रोगविनाशक औषधियाँ उत्पन्न करता है वहाँ उनके सदुपयोग करने की भी वह प्रेरणा देता रहता है। सच पूछा जाए तो वह प्रभु तो वास्तव में हमारे आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक सभी दुःखों से हमें मुक्त करना चाहता है, तभी ही वह वैसा ज्ञान और वैसी ही प्रेरणा भी निरन्तर हमें देता ही रहता है।

वह ऐसा क्यों करता है ? इसलिए कि वह "देव" है, वह दिव्य है, वह दिव्य गुणों का भण्डार है। फिर वह ऐसा है कि वह अपने इस दिव्य गुणों के भण्डार को अपने इन दिव्य गुण, कर्म, स्वभावों के खजाने को अपने तक ही सीमित नहीं रखना चाहता, वरन् औरों को भी देता है। इसलिए वह "देव" है–दाता है अर्थात् वह इन सब दिव्य गुण, कर्म, स्वभावों का दाता है–प्रदाता है। यदि वह ऐसा न होता तो वह 'देव' कैसे कहाता? देवाधिदेव कैसे कहाता? अतः ऐसे सर्वोत्पादक–सब के जनक दिव्य गुण, कर्म, स्वभावों के दाता–प्रदाता परमेश्वर का **"यत् वरेण्यं भर्गः"**–जो शुद्धतम वरण करने के योग्य, पापों को भस्म करने वाला तेजःस्वरूप है **"तत् धीमहि"** उसका हम अपने में ध्यान करें, उस को हम अपने में धारण करें।

अब ऐसा भर्गःस्वरूप–ऐसा तेजःस्वरूप जो सविता देव है, सर्वोत्पादक, सर्वप्रेरक जो दिव्य देव है, वह क्या करता है? उसका प्रथम कार्य तो यह है कि वह हमारे कुसंस्कारों को भूनता है, वह हमारी कुवासनाओं को भूनता है, वह हमारी कुवृत्तियों को भूनता है, और उन्हें दग्धबीजभाव वाली बनाता है। जिसका परिणाम यह होता है कि फिर वे संस्कार, वे कुवासनाएँ, वे कुवृत्तियाँ जब प्रभु के भर्गःस्वरूप–तेजःस्वरूप के सम्पर्क से भुन जाती हैं तो वे ऐसे दग्धबीजभाव को प्राप्त हो जाती हैं जैसे कि भड़भूजे के भुने हुए चने आदि–आदि क्योंकि भड़भूंजा जब चनों को भून डालता है तो फिर दग्धबीजभाव को प्राप्त हुए–हुए वे चने जैसे बीज बनकर नये चनों को नहीं उत्पन्न कर सकते, ठीक वैसे ही वे कुसंस्कार, वे कुवासनाएँ, वे कुवृत्तियाँ भी उस परम पवित्र भर्गःस्वरूप प्रभु के सम्पर्क में आ जाने पर, अर्थात् उसका ध्यान वा धारण करने पर भुनकर वे दग्धबीजभाव को प्राप्त होकर पुनः अगले कुसंस्कारों को, अगली कुवासनाओं को, अगली कुवृत्तियों को नहीं उत्पन्न कर सकेंगी। अब **{"यत्तदोः नित्यसम्बन्धः" इस नियम से 'यः' आया तो 'सः' भी आ गया!}** **"यः"** जो उस तेजःस्वरूप वाला प्रभु है, वह आने वाले जीवन में **{धीः कर्म च प्रज्ञा च।}** **"नः धियः प्रचोदयात्"** हमारी बुद्धियों को ही नहीं, वरन् हमारे कर्मों को भी सत्पथ की ओर प्रेरित करता है अर्थात् वह प्यारा और सब जग से न्यारा प्राणप्रिय प्रभु हमारे जीवन को एक नया मोड़ देता है, एक नई राह देता है, एक नई दिशा देता है।"

इस प्रकार जब वह हमारी बुद्धियों को निरन्तर कुमार्ग से रोककर सन्मार्ग की ओर प्रेरित करता है तो इससे हमारा सोचने–विचारने का प्रकार बदल जाता है, हमारी दिशा बदल जाती है, हमारी राह बदल जाती है अर्थात् हमारी कुबुद्धि सुबुद्धि में बदल जाती है, हमारा कुचिन्तन सुचिन्तन में बदल जाता है, हमारे कुविचार सुविचारों में बदल जाते हैं। इस प्रकार हमारी बुद्धि सुबुद्धि में, चिन्तन सुचिन्तन में, विचार सुविचारों में परिवर्तित होने पर प्रभु कृपा से, प्रभु–प्रेरणा से फिर हमारे सुचिन्तन और सुविचारों के आधार पर ही हमारे कर्म सुकर्मों में, अर्थात् हमारे आहार सदाहारों में, विहार सुविहारों में और व्यवहार सुव्यवहारों में बदल जाते हैं।

इस तरह जब प्रभु ने हमें ज्ञानेन्द्रियाँ कर्मेन्द्रियाँ दोनों प्रदान की हैं तो जैसे हमारी बुद्धियाँ उससे प्रेरित होती हैं तो फिर बुद्धियों के आधार पर हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ कर्मेन्द्रियाँ भी उससे प्रेरित होती रहती हैं। तब उस समय जो हम सोचते हैं, वह शुभ होता है; जो हम देखते हैं, वह शुभ होता है, जो हम सुनते हैं वह शुभ होता है; जो हम सूँघते हैं, वह शुभ होता है; जो हम स्वाद लेते हैं, वह शुभ होता है। अब जब यह सब शुभ होता है तो फिर हम कर्मेन्द्रियों से जो करते हैं वह भी शुभ होता है अर्थात् जो हम खाते हैं, वह पदार्थ शुभ होता है, जो हम पीते हैं, वह पेय शुभ होता है; जो हम बोलते हैं, वह शुभ होता है; जो हम हाथों से करते हैं, वह शुभ होता है; जहाँ हम जाते हैं, वह स्थान शुभ होता है अर्थात् वह सब कुछ न्याय से अर्जित होता है, वह सब कुछ अपने हक का होता है जिसको कि हम प्राप्त करते हैं वा सेवन करते हैं।

इस प्रकार सदा शुभ सोचने–विचारने और सदा शुभ करने का परिणाम भी सदा शुभ ही होता है। फिर उससे हमारा लोक भी सुन्दर बनता है और परलोक भी सुन्दर बनता है। अर्थात् हमें फिर इस लोक में भी सुख–सौभाग्य, मान–सम्मान आदि मिलता है और हमारा परलोक भी सुधर जाता है अर्थात् हमें प्रभु का अनुपम प्यार और आशीर्वाद भी मिल जाता है।

इस मन्त्र का सार यही है कि हम उस परम रक्षक प्राणाधार, दुःखविनाशक, सुखों के दाता सविता देव के शुद्ध तम वरणीय भर्गःस्वरूप का प्रतिदिन प्रातः–सायं ध्यान करें वा धारण करें, और ऐसे पावन स्वरूप वाला वह प्रभुदेव हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करता रहे, ताकि हमारा सब प्रकार से कल्याण हो। इसी तन्त्रगत सार को हृदय में रखकर सच्चे साधक–सच्चे प्रभुभक्त निरन्तर इस मन्त्र के अनुसार जप–तप करते हुए इसी टेक पर टिके रहते हैं। इसी सारगर्भित प्रार्थना पर जमे रहते हैं, कि "भगवान् हमें सद्बुद्धि दे, भगवान् हमें सद्बुद्धि दे।

'वैदिक सुधा' से साभार

☞ पृष्ठ 05 का शेष

श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक

उणादिकोश, अष्टाध्यायी–द्वितीयावृत्ति का पाठ पूरा हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द जी की 23 दिसम्बर 1926 के दिन एक मतान्ध मुसलमान द्वारा गोली मारकर हत्या कर दी गई। पूज्य गुरुवर्य पं. देवनाराण तिवारी जी की प्रेरणा और महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी की सहायता से गुरुजी पुनः शुद्धि के कार्य में लग गये। लगभग 6 महीने तक शुद्धि–कार्य का संचालन करके और उसकी स्थायी व्यवस्था करके गुरुजी आदि पुनः पठन–पाठन में प्रवृत्त हो गए। गुरुजी के शुद्धि–कार्य में लगने पर उस समय धातु प्रक्रिया का पाठ चल रहा था। अतः शेष धातु प्रक्रिया का पूरा पाठ पूज्य तिवारी जी ने युधिष्ठिर जी को पढ़ाया। काशी में अर्थाभाववश तथा पं. शंकरदेव जी का साथ छोड़ देने के कारण गुरुजी ने वापस अमृतसर लौटने का निश्चय किया। इसका सुयोग इसलिए भी बन गया कि गुरुजी से घनिष्ठ रूप से जुड़े लाला रामलाल जी कपूर का जनवरी 1928 में अमृतसर में निधन हो गया। उनके पुत्रों के अनुरोध से एवं गुरुजी की सहमति से 26 फरवरी 1928 ई. को अमृतसर में रामलाल कपूर ट्रस्ट की विधिवत् स्थापना हुई। इसकी स्थापना में महात्मा हंसराज तथा पं० भगवद्दत्त जी का हार्दिक सहयोग और विचार–विनिमय भी सहायक बना। अप्रैल 1928 में पूज्य गुरुवर्य सब छात्रों को साथ लेकर अमृतसर पहुँच गए। अमृतसर में युधिष्ठिर जी का महाभाष्य का पाठ प्रारम्भ हुआ जो 1930 में समाप्त हुआ। अब निरुक्त का पाठ प्रारम्भ हुआ। निरुक्त का अध्यापन करते हुए तथा ब्राह्मण ग्रन्थों के स्वाध्याय के कारण गुरुजी को यह अनुभव हुआ कि वेद की ब्राह्मण–ग्रन्थोक्त याज्ञिक प्रक्रिया को समझने के लिए मीमांसा दर्शन का अध्ययन नितान्त आवश्यक है। इस संकल्प के अनुसार 1932 ई. के जनवरी मास में अपने विद्यार्थियों सहित पुनः गुरुजी काशी आये। काशीवास की इस अवधि में पं. युधिष्ठिर जी ने पं. ढुण्ढिराज शास्त्री जी से न्यायभाष्य, न्यायवार्तिक का कुछ भाग, प्रशस्तपाद, प्रशस्तपाद की किरणावली और न्यायकन्दली नामक टीकायें, वैशेषिक दर्शन की सूत्रवृत्ति तथा सांख्यदर्शन का अध्ययन किया। साथ ही मीमांसक जी ने पं. गिरीश शर्मा से वेदान्त और योग दर्शन का अध्ययन किया तथा मीमांसा शास्त्र के अध्ययनार्थ श्री चिन्नस्वामी जी का अन्तेवासित्व ग्रहण किया।

क्रमशः

अध्यापक आवास, स्टेशन रोड, अमेठी, (उत्तर–प्रदेश)–227405

गतांक से आगे...

ऋषि दयानन्द : मेरी दृष्टि में आप्त राष्ट्र पुरुष

● पं. क्षितीश वेदालंकार

रूपक की दृष्टि से यह सब सही क्यों है ? कहने का ढंग ही तो है। शिव जी के सिर से गंगा निकलती है, यह कहने के बजाए यह कहकर देखिये–जिसके सिर से गंगा निकलती है, वह शिव है। अब किसके सिर से गंगा निकलती है, यह भूगोल का प्रत्येक विद्यार्थी जानता है। हिमालय भारत का सिर है, इसी हिमालय से गंगा (मन्दाकिनी) निकलती है–**'हिमवतः गंगा प्रभवति'** इसका फलितार्थ यह हुआ कि भारत ही वह शिव है जिसके सिर से गंगा निकलती है। अब पवर्ग रचित उक्त रूपक के शेष शब्दों को एक–एक करके ले लीजिए। पिनाक यानी धनुष–धनुर्विद्या और धनुर्वेद के विकास के लिए क्या संसार में भारत के सिवाय और कोई देश भी प्रसिद्ध है? धनुषवाण के रूप में संसार के इस सर्वप्रथम प्रक्षेपास्त्र का निर्माण और प्रथम आविष्कार भारत में नहीं तो और कहाँ हुआ ? फणी के साथ भी यही बात है। सारे संसार में 'साँपों के देश' के नाम से सिवाय भारत के और कौन–सा देश प्रसिद्ध है ? कुछ अन्य देशों में भी साँप बेशक होते हैं, पर साँप की जितनी किस्में और नस्लें इस देश में हैं उतनी और किसी देश में नहीं। फिर, भारत के सँपेरे, जिनकी बीन का जादू विदेशों में होने वाले भारत महोत्सवों में भी लोगों को मुग्ध किये बिना नहीं छोड़ता। इसलिए साँपों के देश वाला लक्षण भी भारत पर ही घटता है।

बालेन्दु–शुभ्र चाँदनी का द्योतक है। जैसी स्वच्छ चाँदनी भारत में है, वैसी और कहाँ। **'सान्द्रा चन्द्रमसो न कस्य कुरूते चित्तभ्रमं चन्द्रिका'**–यह उक्ति निरभ्र आकाश में शीतल और आह्लाददायिनी चन्द्रिका का वर्णन करते हुए किसी भारतीय कवि के मुख से ही निकल सकती है। पाश्चात्य देशों के लिए तो स्वच्छ धूप और स्वच्छ चाँदनी दोनों ही दुर्लभ हैं इसलिए जिस दिन धूप निकल आए वह उनके लिए *'व्हाट ए फाइन डे'* बन जाता है।

भस्म–तो स्पष्ट है। अंग–अंग भस्म रमाये साधु सिवाय भारत के और किस देश में मिलेंगे। जिन नागा साधुओं का एकमात्र आवरण भस्म ही होती है, वे निरावरण साधु भारत में ही सुलभ हैं–जिनकी शाहियाँ (जलूस) हरिद्वार में कुम्भ के मेले पर निकलती हैं और हर की पौड़ी पर उस दिन सर्वप्रथम स्नान करने का अधिकार परम्परा से उन्हें ही प्राप्त है।

मन्दाकिनी की बात ऊपर आ ही चुकी है। इस प्रकार पवर्ग रचित यह शिव का सारा रूपक भारत पर ही घटित होता है। इसलिए जब आप असली शिव की खोज पर निकलेंगे, तब क्या इन रूपकों के फलितार्थों को हृदयंगम किए बिना किसी निष्कर्ष पर पहुँच सकेंगे? इसलिए शिवरात्रि के दिन 'क्या यही सच्चा शिव है'–इस प्रश्न के उदय को जिस प्रकार आप आत्मचेतना का विस्फोट कहते हैं, मुझे उसमें राष्ट्रचेतना भी छिपी हुई दिखाई देती है।

कैलाश और कन्याकुमारी

शिव के रूपक का एक और चमत्कार भी देखिए। शिव कैलाश पर निवास करते हैं और पार्वती कन्याकुमारी में तपस्या कर रही हैं। तपस्या का लक्ष्य क्या है–

कोटि जनम ते रगर हमारी।
वरहुं शम्भु न तौ रहौं कुवाँरी।।

अब शिवजी कैलाश पर और पार्वती कन्याकुमारी में–भूगोल की दृष्टि से दोनों स्थानों की दूरी में दो हजार मील का अन्तर। इस दूरी को पाटे बिना शिव और पार्वती का विवाह कैसे हो? विवाह नहीं होगा, तो पार्वती कुँवारी रह जाएगी, निरी कुमारी कन्या (कन्या कुमारी)। इसलिए विवाह अनिवार्य है। शिव पार्वती के विवाह की कथा का यह रूपक भी क्या राष्ट्रीय भावात्मक एकता (नेशनल इमोशनल इंटिग्रेशन) का द्योतक नहीं है। यों सामान्यतया कैलाश पर शिवजी को और कन्याकुमारी में पार्वती को प्रतिष्ठित करके भारत की उत्तरी और दक्षिणी सीमा को ही जन–जन के मन में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया गया है। जिसमें भूगोल पुस्तकों में नहीं लिखा जाता था, उस युग में ऐसी कथाओं और युग रूपकों से ही भूगोल को स्मरणीय बनाया जाता था। यह पौराणिक भाषा में भारत का भूगोल ही तो है।

ब्रह्मा और विष्णु

यद्यपि विषयान्तर का भय है, पर यहीं ब्रह्मा और विष्णु के भी रूपकों का थोड़ा संकेत कर देना अनुचित नहीं होगा। तभी ब्रह्मा, विष्णु, महेश– इन त्रिदेवों की त्रिपुटी के एकत्र समाधान की सम्भावना है।

विष्णु को शङ्ख–चक्र–गदा–पद्मधारी चतुर्भुज के रूप में चित्रित किया जाता है। ऐसा व्यक्ति भी भौतिक जगत् में असम्भव है, सृष्टि नियम के सर्वथा प्रतिकूल। पर रूपक की दृष्टि से वह भी अत्यन्त अर्थगर्भित है। इसका संकेत मुझे मिलता है उस श्लोक से जिसे आस्थावान् हिन्दू प्रातःकाल उठते ही पृथ्वी पर पाँव रखने से पहले उच्चारण करता है, जो इस प्रकार है–

समुद्रवसने देवि पर्वत–स्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

यह समुद्र की साड़ी पहनने वाली और पर्वतों के स्तनमण्डल को धारण करने वाली विष्णु पत्नी–लक्ष्मी भूमि माता या भारत माता नहीं तो और क्या है ?

यह भूमिमाता रत्नगर्भा है, वसुन्धरा है, अन्नपूर्णा है। इसी के खेतों से तरह–तरह के खाद्यान्न और वनों से नाना वनस्पतियाँ और औषधियाँ पैदा होती हैं। सोना, चाँदी, लोहा, ताम्बा और न जाने कौन–कौन–सी धातुएँ इसी के गर्भ से निकलती हैं। ***'ब्लैक गोल्ड'*** (काला सोना) कहलाने वाला कोयला और ***'लिक्विड गोल्ड'*** (तरल सोना) कहलाने वाला पेट्रोल इसी की कोख की देन है। इस पेट्रोल का–महत्त्व कितना है, इसका अनुमान इस बात से लगाइए कि इसकी आपूर्ति के लिए हमें सोना तक गिरवी रखना पड़ता है। इस खनिज तेल से अब तो उपोत्पाद के रूप में लगभग 500 चीजें तैयार होती हैं और पेट्रोकैमिकल्स के नाम से विज्ञान की एक अलग शाखा ही चल पड़ी है। यदि राष्ट्र विष्णु है, तो यह भारतमाता विष्णुपत्नी है, साक्षात् लक्ष्मी है।

वेद में **'आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्'** इस मन्त्र में जिस आर्यराष्ट्र की कल्पना की गई है, वह क्या पूरी की पूरी विष्णु के 'शङ्ख चक्र गदा पद्मधारी' चतुर्भुज रूप में समाहित नहीं है ? राष्ट्र के अज्ञान को दूर करने वाले ब्राह्मण का प्रतीक है–शङ्ख, राष्ट्र के अभाव को दूर करने के लिए नाना देश–देशान्तर का चक्कर लगाने वाले वैश्य का प्रतीक है– चक्र, राष्ट्र में अन्याय को दूर करने वाले क्षत्रिय का प्रतीक है–गदा और राष्ट्र के आलस्य को दूर कर अपने श्रम से खेतों में और कारखानों में काम करने वाले श्रमिकों का प्रतीक है–पद्म। बुद्धिजीवी, शस्त्रजीवी, धनजीवी और श्रमजीवी शिक्षक, रक्षक, पोषक और श्रमिक के रूप में जब विष्णुरूपी राष्ट्र की भुजाएँ बनकर कार्य करते हैं, तब आर्यराष्ट्र का स्वप्न साकार होता है। श्रम के बिना धन नहीं आता, श्रम में ही लक्ष्मी निवास करती है, जिस धन के साथ व्यक्ति के स्वेदकण नहीं जुड़े है वह कालाधन है, श्वेतधन नहीं। बिना श्रम के उपार्जित कालेधन ने आज एक ऐसी समानान्तर सरकार खड़ी कर दी है कि उसके सामने वास्तविक सरकार भी विवशता अनुभव करती है। आज देश के भयंकर आर्थिक संकट का मुख्य कारण यही है। **'पुष्पिण्यौ चरतो जंघे'**–चलने वाले, श्रम करने वाले व्यक्ति की जांघों में फूल खिलते हैं, ऐतरेय ब्राह्मण के इस वचन में और विष्णु के एक हाथ में पद्म धारण करने में क्या अन्तर है?

रहे ब्रह्मा। वे तो साक्षात् वेदोपदेष्टा हैं, ज्ञान–विज्ञान के आगार हैं। ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती उनकी पुत्री है। उनकी उपासना का सीधा अर्थ है–ज्ञान की उपासना। सारे देश में विष्णु और शिव के मन्दिर तो सैकड़ों हैं, पर ब्रह्मा जी के मन्दिर केवल दो हैं– एक पुष्कर में और दूसरा गोहाटी में। विष्णु और शिव के उपासक भी हज़ारों–लाखों हैं, पर ब्रह्मा जी के उपासकों की गिनती नगण्य है। इसका सीधा अभिप्राय यह है कि अब भारत के निवासियों की ज्ञान की आराधना में रुचि नहीं रही।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश की एक व्यवहार–संगत व्याख्या और भी है। जो भी व्यक्ति छात्रावस्था में विद्या की आराधना करता है, वह प्रकारान्तर से ब्रह्मा की उपासना है। जब गृहस्थ में प्रवेश करता है और घर में गृहिणी के रूप में घर की लक्ष्मी प्रवेश करती है, तब वह विष्णु का उपासक है और जब वानप्रस्थ में वैराग्य धारण कर निवृत्ति मार्ग की ओर बढ़ता है, तब शिव का उपासक है और शिवजी श्मशान में निवास करते हैं तो चतुर्थ आश्रम में श्मशान जाने का अवसर भी उपस्थित हो ही जाता है। इस प्रकार वैदिक धर्म के कालिदास–प्रोक्त चतुराश्रम वर्णन की प्रतीक है त्रिदेवोपासना। यथा–

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्।।

आप कहेंगे–ऋषि दयानन्द ने मूर्तिपूजा का इतना प्रबल खण्डन किया है वैसा और किसी ने नहीं किया और आप प्रच्छन्न रूप से रूपकादि के व्याज से उसी का समर्थन कर रहे हैं। मेरा कहना यह है कि रूपक और अलङ्कार

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

चक्रव्यूह में आज का अभिमन्यु (युवक)

● भद्रसेन

चक्रव्यूह युद्ध की एक प्रक्रिया है, जिसका ऐतिहासिक रूप से महाभारत के साथ सम्बन्ध है। महाभारत की कथा से परिचित पाठक जानते हैं कि धृतराष्ट्र के पुत्रमोह के कारण दुर्योधन ने सर्वत्र मनमानी करनी शुरु कर दी। यहाँ तक कि अंहकार वश दुर्योधन ने पाँचों पाण्डवों को बचपन से ही तंग करना शुरु कर दिया और उनके राज्य के अधिकार को सदा के लिए हड़पने का हर तरह से हर सम्भव प्रयास किया। जुए की शर्त के अनुसार बारह वर्ष का वनवास और एक साल अज्ञातवास जब पाण्डवों ने पूर्ण कर लिया, तब भी दुर्योधन ने पाण्डवों का राज्य न लौटाने की हठ न छोड़ी। श्री कृष्ण ने दूत बन कर दुर्योधन को बहुत समझाया, पर उस का एक ही उत्तर था–**'सूच्यग्रं नैव दास्यामि, बिना युद्धेन केशव'** दुर्योधन के अभिमान ने महाभारत के युद्ध का रूप धारण किया।

चक्रव्यूह

महाभारत का युद्ध प्रथम दस दिन कौरवों की ओर से भीष्मपितामह के सेनापतित्व में लड़ा गया। इस के पश्चात् कौरव सेना के सेनापति गुरु द्रोणाचार्य बने। उन्होंने वीर अर्जुन को युद्धभूमि से दूर ही उलझवा दिया और पीछे से दुर्योधन की चाल को पूरा करने के लिए युधिष्ठिर को पकड़ने का षड्यन्त्र चक्रव्यूह के रूप में रचा। चक्रव्यूह की कला में वीर अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पाण्डव निपुण न थे अतः युवक अभिमन्यु ने अपने अधूरे ज्ञान के आधार पर ही चक्रव्यूह के भेदन का उत्तरदायित्व सम्भाला। वीर युवक के सामने जब कौरवों की कोई चाल सफल न हुई, तो अभिमन्यु को अनेक महारथियों ने घेर लिया। उन्होंने युद्ध के सारे नियमों को तोड़ा और निहत्थे अभिमन्यु को मार कर अपने दिल की भड़ास पूरी की। यह तो प्रत्येक प्रकार से स्पष्ट है, कि अभिमन्यु अपनी वंश परम्परा और इस उत्तरदायित्व को सम्भालने वाला एक युवक था। वह अपने कर्त्तव्य वहन में योग्य होने और जीवन को सफल बनाने के लिए योगेश्वर श्रीकृष्ण, वीर अर्जुन और गुरुजनों से शिक्षा प्राप्त करते हुए योग्यता प्राप्त कर रहा था। ऐसे उभरते हुए युवक को छः/सात महारथियों ने घेर लिया और हर नियम को तोड़कर सदा के लिए सुला दिया। ये महारथी अभिमन्यु के सम्बन्धी थे, अतः उस की प्रगति में सहायक होने चाहिए थें, पर युद्ध में विपक्षी हो जाने के कारण ये अभिमन्यु को घेर कर उस को पीछे धकेलने वाले ही सिद्ध हुए।

वस्तुतः आज के युवक की भी बहुत कुछ चक्रव्यूह में महारथियों द्वारा घिरे अभिमन्यु जैसी ही स्थिति है। ये आज के अभिमन्यु रूपी युवक पूर्ण योग्यता, क्षमता प्राप्त करने से पूर्व ही महारथियों द्वारा जीवनपथ से भटका दिए जाते हैं। तब निश्चित दिशा, स्पष्ट रास्ता, सुलझे विचार के न होने के कारण सफल होना दूर की बात बनकर रह जाती है। जैसे कि हम देखते हैं कि राजनीतिक दलों ने कॉलेजों में भी अपने–अपने संगठन बना रखें हैं। राजनीतिक नेता इन छात्रों को अपनी इच्छानुसार चलाते हैं। जब कि छात्र वहाँ पढ़ने के लिए आते हैं, वे विशेष छात्र पढ़ाई की अपेक्षा उस–उस दल के सदस्य बनाने, दल की नीतियों का प्रचार करने तथा दल की शक्ति बढ़ाने–दिखाने के अवसरों में ही अधिकतर लगे रहते हैं।

युवा–अवस्था

बचपन एक असमर्थता, अशक्तता, बहुत कम समझ की उम्र होती है। इन दिनों बच्चा निश्चिन्त, निर्दोष, सरल, विश्वासी होता है। इस स्थिति से विकास करते–करते जब कोई प्रगति करता है तो उसके शरीर, मन, बुद्धि, पढ़ाई, सामर्थ्य में कुछ प्रौढ़ता आती है तब वह अनेक तरह से सुदृढ, सक्षम होने लगता है, इन दिनों उसके शरीर में, विचारों में, भावों में सुदृढ़ता, स्वावलम्बीपन आने लगता है। युवा, युवक, युवती शब्द **यू मिश्रण–अमिश्रणे** धातु से बनते हैं। अतः इन का भाव है कि जो जोड़ और तोड़ अर्थात् निर्माण तथा विनाश के कार्य में सशक्त हो, क्योंकि यह आयु तूफान, बाढ़, आग की तरह शक्ति का भण्डार होती है। इन दिनों कुछ बनने, प्राप्त करने, प्रगति करने की तीव्र इच्छा होती है और यह इस उम्र की एक स्वाभाविक बात है। इसके लिए वह सब कुछ करने के लिए सदा तैयार रहता है। ऐसे ही इन दिनों प्रत्येक में अन्याय, अत्याचार, शोषण न सहने, प्रतिरोध करने की स्वाभाविक भावना होती है इसीलिए युवक नेताजी, शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि की तरह हर संघर्ष करने के लिए सदा तैयार रहते हैं। वे किसी प्रकार की स्पर्धा, संघर्ष, बलिदान से घबराते नहीं। अतः जोश और आत्मविश्वास के साथ वे सब कुछ प्राप्त करना, जुटाना चाहते हैं, जिस से उनका जीवन पूर्ण विकसित हो सके।

हाँ, ये दिन चौराहे जैसे ही होते हैं, प्रगति, सफलता, सचाई, अच्छाई के नाम पर जो कोई जो राह बताता है, युवक उत्साह, उमंग, जोश, शक्ति का स्रोत होने से उधर ही चल पड़ते है। युवक के अधूरे ज्ञान, अधूरेपन, तीव्र तड़प, चाहना, जोश का अनेक लाभ उठा लेते हैं और तब युवक की स्थिति चक्रव्यूह में घिरे अभिमन्यु जैसी ही हो जाती है।

युवावस्था में पग रखने वाले को व्यावहारिक रूप में जो चीजें आ घेरती हैं, वे ये हैं जैसे कि–

1. शौक–जैसे–जैसे एक बालक बड़ा होता है और अपने साथियों के सम्पर्क में आता है तो अपने से बड़ों को ऐसा करते देखकर या अपने साथियों की संगत से या देखा–देखी या किसी के कहने पर वह धूम्रपान करने लगता है। कुछ शौक–शौक में बीड़ी या सिगरेट के चस्के में पड़ जाते हैं। यदि परिवार वालों की विशेष नजर, देखभाल नहीं होती तो अन्दर ही अन्दर यह आदत पकने लगती है।

2. शान–शान के नाम पर कुछ धूम्रपान की तरह मद्यपान की ओर झुकने लगते हैं। नशे के किसी न किसी साधन–शराब, गोली, कैप्सूल, इन्जेक्शन, स्मैक, अफीम, चरस, हीरोइन आदि के चक्र में घिर जाते हैं। मस्ती, गम भुलाने के नाम पर इस आदत की ओर प्रेरित होते हैं। नशे की आदत दूसरों की देखा देखी जहाँ शौक में पड़ती है, वहाँ निराशा, उदासीनता में भी नशे की लत लग जाती है। यह निराशा–सफलता न मिलने पर जहाँ होती है, जैसे कि परीक्षा में पास न होने पर, वहाँ चाहना पूरी न होने पर भी उदासीनता उभर आती है। जैसे कि एकदम धनी बनने के लिए कोई लाटरी में धन लगाता है और जब वह नहीं निकलती, तो वह निराश, हताश हो जाता है। ऐसे ही समाज में फैले भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद के कारण योग्य होने पर भी किसी को नौकरी का अवसर नहीं मिलता, तो कुछ अपना दुख, कष्ट, चिन्ता भुलाने के लिए भी नशों में डूब जाते हैं। कभी–कभी यह विचार दिया जाता है कि शराब से शक्ति, स्फूर्ति आती है। जब कि व्यवहार में हम देखते हैं कि शराब पीकर अधिकतर गाली देते, झगड़ा करते, व्यर्थ बोलते, दुर्घटना करते और अनुचित कार्य करते हुए ही मिलते हैं। इस शराब का सब से पहले बुद्धि, सोच पर उलटा प्रभाव होता है।

3. मांस भक्षण – ऐसे ही कुछ समझते हैं, कि मांस खाने से शरीर हृष्ट–पुष्ट होता है जब कि मांस दूसरे प्राणियों की हिंसा से मिलता है, पचने में भारी, रोगों को भी देता है।

4. कुछ युवक जल्दी अमीर बन जाने के चक्र में या बिना मेहनत के धन प्राप्त करने के लिए लाटरी, जुए के खेल में पड़ जाते हैं। अपने पास जुए के लिए पैसे न होने पर फिर चोरी, झूठ, हेरा–फेरी से धन जुटाने लगते हैं।

5. कुछ युवा शरीर की स्वाभाविक आकर्षण शक्ति के कारण व्यभिचार का चस्का लगा लेते हैं। इस प्रकार अनेक युवक पूरी तरह से उभरने से पहले ही अपने अधूरेपन के कारण इन उलझनों, व्यसनों में उलझ कर रह जाते हैं। इन व्यसनों में फँसा हुआ व्यक्ति कीचड़ में धँसे हुए की तरह और भी अधिक व्यसनों में घिरता चला जाता है, **{व्यसनी अधोऽधो व्रजति मनु. 7, 53}** क्योंकि धूम्रपान, मद्यपान आदि व्यसनों के होने वाले दुष्परिणाम के सम्बन्ध में विशेषज्ञों के विचार प्रायः आते रहते हैं, कि ये स्वास्थ्य के लिए कितने घातक और रोगों को बढ़ाने वाले हैं। व्यसनों को वर्तने वालों का बुरा हाल इस का स्पष्ट प्रमाण है।

ऐसे ही वैचारिक स्तर पर प्रगति चाहने वाले आज के अभिमन्यु रूपी युवकों के लिए धर्म, शास्त्र, भाषा, जात–बिरादरी, प्रदेश–ज्योतिष, वेश–भूषा, रीति–रिवाज आदि चक्रव्यूह बनाए जा रहे हैं जोकि उन की प्रगति में सहायक होने चाहियें थे पर ये अपनेपन के नाम पर युवकों को घेर कर पीछे धकेलने वाले बना दिए गए हैं जैसे कि माता–पिता अपने बच्चों को अपनी परम्परा की रक्षा के लिए एक विशेष दिशा में डाल कर तदनुरूप ढालने लगते हैं या प्रयास करते हैं। वहाँ उस परम्परा की रक्षा एकमात्र लक्ष्य होता है, युवक की रुचि, जीवन का विकास भुला दिया जाता है तब वह एकांगी बन कर रह जाता है, फिर अवसर निकल जाने पर पुनः यत्न से भी वह बात नहीं बनती। युवक अपनेपन के कारण जोश में उस–उस परम्परा, धर्म, भाषा आदि को अपने लिए सर्वस्व बना बैठते हैं। उसी में अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं। अपनेपन के नाम पर युवक का उससे ऐसा लगाव होता है, कि वह उसके विपरीत कुछ सुनना नहीं चाहता। ऐसी ही एक परिस्थिति का श्री प्रेमचन्द जी ने सेवासदन में वर्णन किया है। जब युवक सदन के विवाह पर तात्कालिक रिवाज के अनुकूल नाचने वाली ले जाने और न ले जाने पर विचार होता है।

क्रमशः

182 शालीमार नगर,
होशियारपुर 146001

☞ पृष्ठ 02 का शेष

प्रभु-भक्ति

'सुन्दर' और मिलै सब ही सुख,
दुर्लभ सन्तसमागम भाई।।

62. तीक्ष्ण धारावाली नदियों में जिस प्रकार कोई तृण शान्त नहीं रहता, बहकर इधर–उधर हो जाता है, ठीक उसी प्रकार ब्रह्मचर्य–हीन मनुष्य के चंचल हृदय में कोई साधन–विवेक नहीं टिकता, इधर–उधर बह जाता है।
63. जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप होने से सब दोष–दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण–कर्म–स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण–कर्म–स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। **(सत्यार्थ प्रकाश)**
64. परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करने से आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी वह नहीं घबरायेगा। **(सत्यार्थ प्रकाश)**
65. विपत्ति यथार्थ में विपत्ति नहीं है, सम्पत्ति यथार्थ में सम्पत्ति नहीं। भगवान् का विस्मरण होना ही विपत्ति है और उनका स्मरण बना रहे, यही सबसे बड़ी सम्पत्ति है।

विपदो नैव विपदः सम्पदो नैव सम्पदः।
विपद्विस्मरणं विष्णोः सम्पन्नारायणस्मृतिः।।

66. हे जगद्गुरो! हम पर सदा विपत्तियाँ ही आती रहें, क्योंकि आपके दर्शन विपत्ति में ही होते हैं।

विपदः सन्तु नः शश्वत् तत्र तत्र जगद्गुरो।
भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भव दर्शनम्।।

67. मुँह के चमड़े सिकुड़ गए, सिर के बाल श्वेत हो गए, सब अंग ढीले हो गए, पर एक तृष्णा ही तरुण हुई जा रही है। **(भर्तृहरि)**
68. आशा नाम की एक नदी है। इसमें मनोरथ–रूपी जल भरा है। इसमें तृष्णा–रूपी लहरें हैं, राग ही इसमें मगर हैं, नाना प्रकार के तर्क–वितर्क पक्षी हैं। यह नदी धैर्य–रूपी पेड़ तोड़ देनेवाली है। मोह ही इसके कठिन भँवर हैं और चिन्ता–रूपी इसके ऊँचे किनारे हैं तथा शुद्ध मननशील योगी ही इसके पार जाकर आनन्द करते हैं। **(भर्तृहरि)**
69. भोग वैसे ही चंचल हैं जैसे ऊँचे पानी की लहर। प्राण क्षणभर में नाश होनेवाले हैं। प्रियाओं में रमनेवाली जवानी के सुख की स्फूर्ति केवल दो–चार दिन की है। इसलिए हे ज्ञानी पण्डितो! इस अखिल संसार को निस्सार समझ, लोकानुग्रह के विषय में मन को अनुरक्त कर, ब्रह्म का ध्यान करने का प्रयत्न क्यों नहीं करते ? **(भर्तृहरि)**
70. मनुष्यों की आयु 100 वर्ष की परिमित है। उसका आधा भाग तो रात में ही बीता जाता है। उस बाकी का आधा लड़कपन और बुढ़ापे में चला जाता है। बाकी रोग, व्याधि, वियोग, दुःख, सेवा आदि मैं बीतता है। यह जीवन जल–तरंग के समान चंचल है। इसमें प्राणियों को सुख कहाँ ? **(भर्तृहरि)**
71. जब तक शरीर नीरोग और स्वस्थ है, बुढ़ापा दूर है, इन्द्रियों की शक्ति न्यून नहीं हुई है और आयु भी क्षीण नहीं है, तभी तक अपने कल्याण के लिए पण्डित को यथाशक्ति यत्न कर लेना चाहिए नहीं तो घर में आग लगने पर कुआँ खोदने की बात कैसी है ? **(भर्तृहरि)**
72. सूर्य चाहे कमल को कितना ही ताप दे, कमल का मुँह उसके सामने सदा खुला रहेगा। तुम चाहे मेरे कष्टों का निवारण न करो, मेरा हृदय तो तुम्हारी ही दया से द्रवीभूत होगा। यदि माता किसी कारण से बच्चे को अपनी गोद से उतार भी देती है, तो भी बच्चा उसी में अपनी लौ लगाये रहता है। यदि पति अपनी पतिव्रता का सबके सामने तिरस्कार भी करे, तो भी वह उसका परित्याग नहीं करती। इसी प्रकार भगवन्! मैं तुम्हें कैसे छोड़ सकता हूँ? **(भक्त कलशेखर)**
73. जिनका चित्त अखिल सौन्दर्य के भण्डार परमात्मा (सुभव सुपेशर्स) में लगता है, वे क्या मनुष्य के क्षणभंगुर घृणित रूप पर आसक्त हो सकते हैं ? **(देवि)**
74. ईश्वर ने हम लोगों को जो कुछ भी दिया है, वह बटोरकर रखने के लिए नहीं है, प्रत्युत योग्य पात्र को देने के लिए है। **(जरथुस्त)**
75. जो लोगों के अत्याचारों से व्यथित नहीं होते, वही महापुरुष हैं। **(मंसूर)**

क्रमशः

☞ पृष्ठ 03 का शेष

ईश्वर - अस्तित्व का...

किया। कहा–इसके खाने से मर जाओगे। शैतान ने उनसे कहा कि वृक्ष के फल खाने पर ईश्वर के समान ज्ञानवान हो जाओगे और मरोगे नहीं। आदम द्वारा ईश्वर की आज्ञा उल्लंघन करने के लिये, आदम की सन्तान यानी समस्त मनुष्य जाति को आज भी ईसाई धर्म में पापी मानते हैं।

प्रश्न–82 सूर्य के अंधियारा ग्रस्त होने का उल्लेख है। चाँद अपनी ज्योति न देगा। तारे आकाश से गिर पड़ेंगे।

प्रश्न–106 वायु के प्रकोप से आकाश के तारे पृथिवी पर गिर पड़े और आकाश जो पत्र की तरह लपेटा जाता है, अलग हो गया।

प्रश्न–116 लाल अजगर की पूँछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींच के पृथिवी पर डाला।

प्रश्न–128 जिसके सम्मुख से पृथिवी और आकाश भाग गए और उनके लिये जगह नहीं मिली।

विज्ञान विरुद्ध इन बातों से, ईसाई धर्म, आज भी सन् 2017 में भी मुक्त नहीं हो पाया।

ईसाई मत में पृथ्वी को ब्रहमाण्ड का केन्द्र माना जाता है। आश्चर्य है ईस्वी सन् 1564 में कोपरनिकस स्थापित कर चुका था कि पृथिवी नहीं सूर्य ब्रह्माण्ड (आशय सौरमण्डल) का केन्द्र है। अन्य ग्रहों की तरह पृथिवी भी सूर्य की परिक्रमा करती है। गैलिलियो ने कोपरनिकस की स्थापना का समर्थन किया। सन् 1616 में सूर्य–स्थिरता और पृथिवी के घूमने का सिद्धांत घोषित किया। कुछ दिन बाद ही उन्हें चर्च के अधिकारियों के पास उपस्थित होना पड़ा। उन्हें सरकारी तौर पर चेतावनी दी गई कि इस विचार का प्रचार बन्द करें। स्वयं कट्टर कैथोलिक होने के कारण 1630 तक यानि 14 वर्ष तक कोई सार्वजनिक वक्तव्य नहीं दिया। फिर उन्होंने एक पुस्तक Dialogue Concerning Two Systems Of The World प्रकाशित की। 70 वर्षीय इस वृद्ध वैज्ञानिक को न्यायालय में उपस्थित होना पड़ा। उन पर दबाव डाला गया कि वह अपने कथनों को झूठा मान लें तो उन्हें माफ किया जा सकता है। गैलिलियो ने इनकार कर दिया और अपनी बात पर डटे रहे। उन्हें जेल की सजा हो गई। सन् 1637 में वे अन्धे हो गए। 8 जनवरी 1642 को जेल में ही उनका देहावसान हो गया।

कैथालिक धर्म के सर्वोच्च अधिकारी पोप ने 350 वर्ष बाद सन् 1990 में गैलिलियो सम्बन्धी भूल को स्वीकार किया।

महर्षि दयानन्द ईसामसीह द्वारा किए गए चमत्कारों था खोखलापन–असत्यता बताने के लिये लिखते हैं–"जैसा आजकल यूरोप देश उन्नति युक्त है वैसा पूर्व में (ईसा के समय) होता तो ईसा की सिद्धाई (सिद्धि चमत्कार, स्वर्ण से कोढ़ ठीक होना, मृतक का जीवित हो उठना आदि) कुछ भी नहीं चलती। अब कुछ विद्या हुए पश्चात भी, 'व्यवहार के पेच' और 'हठ' से इस पोल मत को न छोड़कर, सत्य वेदमार्ग की ओर नहीं झुकते, यही उनमें न्यूनता है।" सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के 140 वर्ष बाद भी यही स्थिति बनी हुई और विज्ञान भी कहाँ से कहाँ पहुँच गया है।

महर्षि दयानन्द तेरहवें सम्मुलास का समापन इन शब्दों में करते हैं–"अब कहाँ तक लिखें इनकी बाईबिल में लाखों बातें खण्डनीय हैं। यह तो थोड़ा–सा, चिह्न मात्र, ईसाईयों की बाईबिल पुस्तक का दिखलाया है। इतने से ही बुद्धिमान लोग बहुत समझ लेंगे। थोड़ी–सी बातों को छोड़ सब झूठ भरा है। जैसे झूठ के संग, सत्य शुद्ध नहीं रहता, वैसे ही बाईबिल पुस्तक मान्य नहीं हो सकती।

क्रमशः

22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर, पिन–474001 (म.प्र.)

☞ पृष्ठ 07 का शेष

ऋषि दयानन्द : मेरी ...

आदि साहित्यिक रसास्वादन के लिए हैं, वे कल्पना–विलास और मानव की रागात्मक वृत्ति की तृप्ति के लिए हैं, व्यावहारिक जीवन में तो ठोस सत्य का ही आश्रय लेना पड़ता है। हिन्दू समाज से ग़लती यह हुई कि उसने इन रूपकों और आलङ्कारिक वर्णनों को जीवन का अंग बना लिया। जो रूपक आत्मचेतना से सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना की ओर ले जाने वाले होने चाहिए थे वे मूर्तिपूजा के रूप में न आत्मचेतना के वाहक बने, न सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना के। इस जड़पूजा ने सारे राष्ट्र को जड़ बना दिया–ऐसा जड़ जिसमें किसी भी प्रकार की चेतना नहीं रही।

'पं. क्षितीश वेदालंकार ग्रन्थावली खण्ड–1' से साभार

पत्र/कविता

सूर्य नमस्कार

'सूर्य' सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सबसे प्रमुख शक्तिशाली और अपार उर्जा का ग्रह हैं जिसके उदय से प्राण वायु (आक्सीजन) का प्रवाह समस्त वायु मडल में फैल जाता है। सूर्य के अस्त होने पर प्राण वायु का प्रवाह रुक जाता है।

सूर्य उदय से समस्त ब्रह्माण्ड में मानव, वनस्पति, जलचर, नभचर को जीवन शैली प्रारम्भ करने की शक्ति मिलती है।

चरक संहिता में वर्णित है कि मानवों को स्वस्थ्य जीवन के लिए सूर्य उदय सबसे श्रेष्ठ समय है। यदि कोई मानव सूर्य उदय की लालिमा को अपने नेत्रों से समाहित करे तो वह नेत्रों के लिए सर्वोत्तम है। अनुलोम–विलोम भी सूर्य उदय के साथ करना हितकारी है। सूर्य उदय के साथ यथासंभव पैदल भ्रमण करना श्रेष्ठ कार्य है। पैदल भ्रमण के दौरान तेज़ श्वसन भी होना उचित है।

समस्त वनस्पति सूर्य उदय के समय अपना जीवन प्रारम्भ करते हैं। सूर्य अस्त से पहले समस्त वनस्पति प्राणवायु को वायु मण्डल में प्रवाहित करते रहते हैं ? सूर्य अस्त के उपरान्त समस्त वनस्पति *कार्बन डाई आक्साइड* का प्रवाह करते हैं।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार प्राण वायु से ही हमारी लालरक्त कोशिकायें स्वस्थ रहती हैं।

आयुर्वेद विशेषज्ञों का मत है कि सूर्य अस्त के उपरान्त भोजन नही करना चाहिए ? पाचन क्रिया शिथिल हो जाती है।

समस्त धर्म यथा संभव सूर्य की उपासना करते हैं। आर्थिक सलाहकारों का मत है कि जिस क्षेत्र में सूर्य की सबसे ज्यादा किरणों का प्रवेश होता है उस क्षेत्र में आर्थिक प्रगति के आंकड़े सर्वश्रेष्ठ होते हैं।

विगत एक शताब्दी में सूर्य की किरणों से अनेक अनुसंधान सम्पन्न हुए हैं। अब सूर्य की ऊर्जा से यातायात के साधन–हवाई जहाज, पानी के जहाज भी लाभान्वित है। विश्व के अधिकांश देशों में उर्जा प्रमुख स्रोत बन गया हैं। आर्थिक स्तर पर ?

भारतीय संस्कृति के समस्त विद्वान् सूर्य (सूर्या) से ही अपना जीवन श्रेष्ठ बनाते थे। प्रत्येक विद्वान सूर्य में शिक्षा ग्रहण करते थे।

स्वास्थ्य विद्वान् अस्थि रोगी, नवजात शिशुओं, विकलांग, वृद्धों को सूर्य की उपासना और उसके सम्पर्क में रहने का परामर्श देते हैं। सूर्य की किरणों से **विटामिन 'डी'** मिलता है।

संग्रहकर्ता
कृष्ण मोहन गोयल
113–बाजार कोट
मो. 9927064104

अमर स्वामी जी महाराज के अमर दोहे

धन्यवाद कर ईश का आज 'अमर' हर्षाय।
अतिथि अन्न निज भाग्य का, तेरे घर में खाय।।
आप निरन्तर छू रहे, हो मेरे सब गात।
यह निश्चय कर 'अमर' प्रभु, शुद्ध रहूँ दिन रात।।
मेरे मन में आपका, है हर समय निवास।
यत्न करूँगा 'अमर' प्रभु, झूठ न आवे पास।।
जगदीश्वर है हृदय में करके यह विश्वास।
'अमर' न आने दूं कभी द्वेष द्रोह को पास।।
प्रभु प्रकाश के पुंज हैं, करते ज्ञान प्रकाश।
हो इस निश्चय से 'अमर' अन्धकार का नाश।।
मैं सुपुत्र हूँ आपका आप सुपिता महान्।
'अमर' न इस सम्बन्ध को तोड़ो हे भगवान्।।
जो न कुछ भी जानता पर समझता सब कुछ जानता हूँ।
मूर्खता का ढेर उसको है 'अमर' मैं मानता हूँ।।
बोलचाल और चतुरता सभी रीति और नीति।
जो सीखे विधिवत, 'अमर' पावे सबसे प्रीति।।
विद्या धन संचय करे, अजर अमर वत् जान।
धर्म करे नित 'अमर' बुध, मृत्यु निकट पहुचान।।
विद्या धन सब धनों में 'अमर' श्रेष्ठ शुभ जान।
जो न नशै न बिके लुटे, घटे न कीन्हें दान।।
विद्या देती नीच को, राजों तक पहुँचाया।
जैसे 'अमर' समुद्र में नदी काष्ठ ले जाय।।
दो जन पत्थर बांध के जल में देओ डुबाय।
धनी न दान करे 'अमर' निर्धन तप न कमाय।।
शस्त्र–शास्त्र की दो 'अमर' विद्या लो पहचान।
हंसी–बुढ़ापे एक से दूजी से सन्मान।।
कच्चे बर्तन में सदा देता चिहन कुम्हार।
बच्चों में गण 'अमर' नित, दीजै इसी प्रकार ।।
सारे संशय मेट कर 'अमर' ज्ञान प्रकटाय।
सबका लोचन शास्त्र है, इस बिन अन्ध कहाय ।।
धन सम्पत्त–यौवन–""अमर" चौथा है कुविचार।
एक समर्थ विनाश में कौन दशा जहं चार।।

शास्त्रार्थ–महारथी अमरस्वामी–ग्रन्थ संग्रह से साभार

वृक्ष-माता अमरता देवी बिश्नोई

363 बाल, वृद्ध, नर नारी के साथ
बलिदान!
खेजड़ी पेड़ों को बचाने हेतु
कितने पर्यावरणविदों ने
वृक्षों को बचाने को प्राण अर्पित किए?
या केवल पुरस्कार की जुगाड में !
पर्यावरण दिवस पर ले चलता हूँ,
1730 की भादों शुदी दशमी, 5 सितम्बर
जोधपुर के राजा की आज्ञा
लकड़हारों को खेजड़ी वृक्ष काटने की
माता अमरता देवी के नेतृत्व में
ग्रामवासी चिपक गये पेड़ों से।
कुल्हाड़े चलने लगे
कटते गये,कटते गये, कटते गये
रेगिस्तान की चमकीली रेत
मानव रक्त से लाल, चारों ओर हाहाकार
आज कितने पर्यावरणविद् याद करते
वीरांगना अमरता देवी को और
सरकार उनके नाम पर कब
स्थापित करेगी राष्ट्रीय पुरस्कार?

तारा सिंह, मेरठ

डी.ए.वी. बहरोड़ में चरित्र निर्माण एवं वैदिक चेतना योग शिविर

आर्य युवा समाज राजस्थान के तत्वावधान में राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री योगी सूरी जी की प्रेरणा से डीएवी पब्लिक स्कूल बहरोड़ में विशाल ब्रह्मचर्य, चरित्र निर्माण एवं वैदिक चेतना योग शिविर 17 मई 2026 से 23 मई 2026 तक आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विनोद कुमार यादव (महामंत्री आर्य समाज राजस्थान) ने अपने संबोधन में कहा कि यह शिविर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का सशक्त माध्यम है। ऐसे आयोजनों से बच्चों में आत्मविश्वास, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता एवं रचनात्मक सोच का विकास होता है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री रामानन्द आर्य (प्रधान आर्य समाज बहरोड़) ने वैदिक मूल्यों व स्वामी दयानंद सरस्वती के सिद्धांतों को बच्चों के जीवन में उतारने के लगातार हो रहे उचित प्रयासों के लिए डीएवी के प्राचार्य की सराहना की।

शिविर का उद्देश्य युवाओं को नशाखोरी, व्यभिचार, अनुशाशनहीनता आदि दुर्गुणों से दूर रखने व वैदिक संस्कारों से संस्कारित करना था।

सात दिवसों में योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों के द्वारा आर्यवीरों एवं वीरांगनाओं को शारीरिक गतिविधियाँ जैसे आत्म रक्षण के लिए लाठी, भाला, तलवार, कमांडो ट्रैनिंग, योग की क्रियाओं का प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही दैनिक यज्ञ के करने व कराने में भी प्रशिक्षित किया गया।

शिविर में 408 बालक–बालिकाओं ने उत्साह के साथ बढ़–चढ़कर भाग लिया।

शिविरार्थियों को स्वामी प्रद्युमन जी, स्वामी गणेशानन्द जी, स्वामी रामदेवजी महाराज, स्वामी हंसानन्द महाराज, स्वामी आनन्द मित्र महन्त शुभनाथ जी आदि संन्यासियों का आशीर्वाद मिला। सैकड़ों अभिभावकों सभी विद्यालय के समस्त स्टाफ ने सहभागिता की।

जिया लाल मित्तल डी.ए.वी. गुरदासपुर में डी.ए.वी. 'स्थापना दिवस' पर यज्ञ

जिया लाल मित्तल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल में डी.ए.वी. स्थापना दिवस अत्यंत गरिमामयी ढंग से मनाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना हेतु एक विशेष

वैदिक महायज्ञ (हवन) का अनुष्ठान किया गया। विद्यालय के समस्त प्रबुद्ध शिक्षकों, स्टाफ सदस्यों और प्रधानाचार्य श्री राजीव भारती ने इस यज्ञ में आहुति दी।

प्रधानाचार्य श्री राजीव भारती ने स्थापना दिवस पर आर्य समाज के संस्थापक, युगप्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती जी के चरणों में नमन किया और महात्मा हंसराज, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, पंडित लेखराम, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा आनंद स्वामी जी तथा लाला लाजपत राय जी जैसे महान आर्य पुरुषों एवं मनीषियों का पुण्य स्मरण किया।

प्रधानाचार्य ने जिया लाल मित्तल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल में 1 जून को पूर्ण हुई अपनी 19 वर्षों की यात्रा की सफलता, चुनौतियों और उपलब्धियों से भरे अनुभवों को भी साझा किया। उन्होंने डी.ए.वी. संस्था के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता दोहराते हुए डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, नगरवासियों, प्रबुद्ध जनों और विशेष रूप से अभिभावकों का धन्यवाद किया।

श्री राजीव भारती ने शिक्षकों से एकजुट होकर बॉर्डर क्षेत्र के इस विद्यालय को क्षेत्र का सबसे अनूठा संस्थान बनाने का आह्वान किया। स्टाफ की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए सफलता का श्रेय हर एक कर्मचारी की कड़ी मेहनत, निष्ठा और समर्पण को दिया।

सामूहिक शांति पाठ के साथ प्रसाद वितरण से समारोह सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल पौंधा–देहरादून का 26वाँ वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न'

श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा, देहरादून का 26वाँ 3 दिवसीय वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हो गया।

समापन दिवस पर डॉ. वेदपाल जी ने कहा कि महर्षि व्यास जी ने मनुष्य को परमात्मा की सबसे उत्तम रचना कहा है। इस मनुष्य को श्रेष्ठ बनाने का साधन एकमात्र वैदिक शिक्षा है।

उत्सव में तीनों दिन सामवेद पारायण यज्ञ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, होशंगाबाद थे। गुरुकुल की यज्ञशाला में पांच वृहद् यज्ञकुण्डों में यज्ञ सम्पन्न किया गया।

उत्सव में गुरुकुल सम्मेलन एवं व्यायाम सम्मेलन आदि सम्पन्न हुए। डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी, डॉ. वेदपाल जी, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, डॉ. आनन्द कुमार आईपीएस, आचार्या डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा जी आदि के उद्बोधन हुए।

आयोजन में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, गौतमनगर, दिल्ली भी उपस्थित रहे। आयोजन में आर्यजगत् के अनेक पुस्तक विक्रेताओं एवं यज्ञकुण्ड आदि सामग्री के विक्रेताओं ने अपने भव्य स्टाल लगाये थे।

आचार्य डॉ. धनंजय आर्य एवं अधिष्ठाता पं. चन्द्रभूषण शास्त्री जी ने सभी आगन्तुक सभी ऋषिभक्तों का धन्यवाद किया।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2026

आर्यसमाज सैक्टर 16डी चण्डीगढ़ में विशेष उद्बोधन

आर्य समाज सेक्टर 16 डी चंडीगढ़ में **'सुखी जीवन का मार्ग'** विषय पर विशेष वक्तव्य का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ ईशस्तुति के प्रथम मंत्र के साथ हुआ।

कार्यक्रम में आर्यसमाज सैक्टर 16डी चण्डीगढ़ के सदस्यों के साथ साथ ट्राईसिटी के सभी समाजों से सदस्य एवं डीएवी संस्थानों के प्राचार्य, शिक्षक और विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

महाविद्यालयों एव विद्यालयों से उपस्थित विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के भजनों और विद्वानों के ज्ञानवर्धक वक्तव्य से सभी आर्यजन लाभान्वित हुए।

मुख्य वक्ता माननीय न्यायमूर्ति श्री प्रीतम पाल चौधरी (पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश) ने अपने ज्ञानवर्धक एवं सुखदायी वक्तव्य में कहा **"सुखी जीवन का मार्ग वेदज्ञान में, शुभ कार्यों में, विद्या अविद्या को जानने में है।"**

मुख्यातिथि आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा चंडीगढ़ के प्रधान श्री आर सी जीवन जी ने अपने आशीर्वचन में बताया, जहाँ वेद नहीं वहाँ वेदना है और जिस जीवन में पवित्रता नहीं आती है वो जीवन भर परम सुख नहीं पा सकता। मुख्यातिथि ने डीएवी संस्थानों के प्यारे बच्चों एवं शिक्षिकाओं द्वारा प्रस्तुत किए गए भजनों को सराहा।

मंत्री डॉ. सीमा कंवर और प्रधान स्त्री समाज श्रीमती अनुजा शर्मा ने कार्यक्रम को सफल बनाने में उपस्थित आर्यजनों, विशिष्ट अतिथियों एवं आयोजक टीम सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यक्रम सम्पन्न शान्तिपाठ एवं ऋषि लंगर के साथ सफलतापूर्वक हुआ।

डी.ए.वी. जी.ए. पट्टा जटियाँ (कांगड़ा) में विश्व तंबाकू निषेध दिवस

डी.ए.वी. जी.ए. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पट्टा जटियाँ में विश्व तंबाकू निषेध दिवस जागरूकता एवं उत्साह जानकारी दी।

इस अवसर पर रंगोली प्रतियोगिता, चार्ट निर्माण प्रतियोगिता तथा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों को तंबाकू के दुष्प्रभावों के प्रति जागरुक करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। एक जागरूकता रैली निकाली गई तथा तंबाकू निषेध का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, फतेहपुर की चिकित्सा टीम विशेष रूप से उपस्थित रही। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए तंबाकू सेवन से होने वाली गंभीर बीमारियों एवं इसके सामाजिक दुष्प्रभावों के बारे में विस्तृत चिकित्सा टीम द्वारा प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

प्राचार्य श्री विशाल शर्मा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए तंबाकू मुक्त समाज के निर्माण में युवाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों से स्वयं नशे से दूर रहने तथा समाज में जागरूकता फैलाने का आह्वान किया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

डी.ए.वी. पालमपुर (हि.प्र.) में डी.ए.वी. स्थापना दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पालमपुर में डी.ए.वी. स्थापना दिवस अत्यंत श्रद्धा, हर्षोल्लास और गरिमा के साथ मनाया गया।

इस विशेष अवसर पर स्कूल परिसर में एक भव्य एवं पवित्र यज्ञ का इतिहास से अवगत कराने के लिए एक विशेष ज्ञानवर्धक सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें महर्षि दयानंद सरस्वती जी के विचार, महात्मा हंसराज के निस्वार्थ त्याग, लाला लाजपत राय, महात्मा आनन्द स्वामी और पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी जैसे महान देशभक्तों

आयोजन किया गया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य, शिक्षक–शिक्षिकाओं तथा विद्यार्थियों ने श्रद्धापूर्वक आहूति डाली। वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ शुरू हुए इस हवन से पूरा वातावरण भक्तिमय और सकारात्मक उर्जा से सराबोर हो गया।

यज्ञ के उपरांत विद्यार्थियों को डी.ए.वी. आंदोलन और इसके गौरवशाली के अमूल्य योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला गया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य ने सभी को स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि डी.ए.वी. केवल शिक्षण संस्थान ही नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण का एक महा–अभियान है। कार्यक्रम का समापन शांति पाठ और सभी को प्रसाद वितरण के साथ किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**